॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अप्रैल, 2015 वर्ष 18, अंक 4	दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110	वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2072	दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756	ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये		कुल पृष्ठ 20

अनुव्रतः पितुः पुत्रो-पुत्र पिता के अनुव्रती हों

❒ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

अथर्ववेद के मन्त्र पर यह एक चतुर्थांश है आर्य समाज के उपदेशक अपने प्रवचनों में प्राय: उपदेश देते हुए इस वाक्य से समझते हैं कि हमारा परिवार वैदिक परम्पराओं से युक्त हो पुत्र पिता के अनुव्रती हो। उनकी आज्ञा का पालन करने वाले हों। माता के द्वारा मन को नियन्त्रण करने का उपदेश हो वह सबके मन की बात समझकर उनके खान-पान एवं स्वास्थ्य का ध्यान करे। पत्नी अपने पति देव के प्रति मधुरभाषिणी हो परिवार को कल्याणकारी वाणी द्वारा सुन्दर स्वरूप तैयार किया जाये ऐसा हमारा परिवार होगा। उसे ही वैदिक परिवार अथवा आदर्श परिवार कहा जायेगा। उसके ही साथ कुछ मन्त्र हैं जो भाई-भाई में स्नेह, आत्मीयता, भ्रातृत्व की भावना का उपदेश है बहिन के लिए भी ऐसा ही सन्देश है। अथर्ववेद में ऐसे सुन्दर परिवार बनाने के लिए प्रत्येक भाई के लिए प्रत्येक बहिन के लिए प्रत्येक पति-पत्नी के लिए एवं प्रत्येक पिता प्रभु के लिए यह सन्देश है किसी के साथ कोई भेदभाव अथवा पक्षपात् की भावना देश काल के आधार पर नहीं गरीबी-अमीरी या जात-बिरादरी विशेष के लिए नहीं वर्तमान में किसी राजनैतिक पार्टी सपा, बसपा, भाजपा, कांग्रेस की भी बात नहीं, ठाकरे ही तरह कोई प्रान्तवाद भी नहीं है सभी मानव मात्र को यह सन्देश है। आजकल गुरुडम चल रहे हैं ध र्म के नाम पर कई प्रकार के पन्थ सम्प्रदाय मजहब चल रहे हैं उनमें भी किसी से भेदभाव नहीं है सभी पन्थ और सम्प्रदाय इस बात को स्वीकार करते हैं और वे भी इसी प्रकार का अपना परिवार बनाना चाहते हैं क्योंकि यह वाणी वेद वाणी है जो परमात्मा प्रदत्त है इस ज्ञान सागर में जो भी गोता लगायेगा वही सुखी जीवन जीने का अधिकारी बनेगा आवश्यकता इस बात की है कि आप किसी भी माध्यम से अपने मन को शिवसंकल्प के साथ तैयार करें अपनी मानसिक चेतना को परिवार के प्रति समर्पित करें अपने लक्ष्य को निर्धारित करें अपने ऊपर भी आपको पूर्ण नियन्त्रण करना होगा मनसा, वाचा, कर्मण उसे व्यवहार में उतारने के लिए तपश्चर्या करनी होगी। आत्मचिन्तन के द्वारा अपना आत्मनिरीक्षण भी करना होगा। प्रतिदिन प्रात: काल ब्रह्ममुहूर्त्त में जैसा कि मनुस्मृति में आया है-ब्राह्मेमुहूर्त्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तये्। काय क्लेशांच तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थ मेव च।।

प्रात: काल ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर आप अपना आत्म निरीक्षण प्रारम्भ करें कि मेरे जीवन में क्या न्यूनता रह गई है जो परिवार अभी मेरे अनुकूल नहीं हो पा रहा है मुझे क्रोध, आलस्य, प्रमाद जैसे दुर्गणों ने अपना दास तो नहीं बना लिया है स्वास्थ्य ठीक है फिर दिनचर्या में धार्मिक वातावरण तैयार करने के लिए स्वयं कितना समय दे पा रहा हूँ आर्थिक स्थिति के लिए कितने समय और पुरुषार्थ की अपेक्षा है उसे पूरा करने के लिए किन-किन साधनों की अपेक्षा है उसे पूरा करने के पश्चात् संस्कार और शिक्षा के लिए कैसा प्रयास चल रहा है? वह आपके सामर्थ्य के अनुसार होना अपेक्षित है। यदि न्यून है तो उसे बढ़ाने का प्रयास करना है यदि बढ़ा हुआ है तो उसके निरन्तर की आवश्यकता है। यदि प्रतिदिन निरन्तरता नहीं है तो भी परिणाम आशाजनक नहीं मिलेगा। जैसे परीक्षाकाल में छात्र परीक्षा की तैयारी करना है याद किया हुआ पाठ पुन: स्मरण करता है जो याद नहीं है उसे स्मरण करता है प्रतिदिन के अभ्यास से छात्र निश्चिन्त होकर परीक्षा में निर्भय रहता है और अच्छे अंक प्राप्त करके स्वयं प्रसन्न होता है तथा परिवार के सदस्यों एवं अपने गुरुजनों को भी प्रसन्न करता है इसी प्रकार वह व्यक्ति जो अपने परिवार को अपने अनुकूल परम्परा से रखना चाहता है उसके लिए भी इतनी ही तन्मयता, सावधानी, समर्पण एवं प्रतिदिन अभ्यास की आवश्यकता है।

प्राय: हमारी सभी की भावना तो रहती है कि मेरा परिवार अच्छा हो बच्चे आज्ञाकारी हों, हमारी श्रीमती मधुर भाषिणी हो, अन्य जो विशेषतायें ऊपर कहीं है वे सब प्राप्त हो। उसके लिए प्रयास कितना करना है कैसे करना है? व्यवहारिक रूप में जबतक आचरण नहीं करेंगे तब तक हम उसका पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे। (शेष पृष्ठ 17 पर)

नववर्ष का सुस्वागत करना है

अमानवता की बातें छोड़ो
मानव बनना है हमको
फूलों के संग नव वर्ष का
सुस्वागत करना है हमको।
भारत बलिष्ठ बनाना है हमको
देश को आर्य बनाना है हमको
नई उमंग से नई तरंग से
सुस्वागत करना है हमको।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महात्मा हंसराज जन्म दिवस पर समर्पण महोत्सव आयोजित

संध्या, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा से जुड़े- श्री पूनम सुरी जी

महात्मा हंसराज जी के 150वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में देश-भर में हुए आयोजनों की श्रृंखला में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज हरियाणा के संयुक्त तत्वाधान में डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुना नगर के परिसर में 'समर्पण महोत्सव' का आयोजन किया गया। महोत्सव के संदर्भ में उपसभा और डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स के संयुक्त प्रयासों से यमुना नगर एवं इसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में लगभग पन्द्रह दिन तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये

गये। मुख्य आयोजन 28 फरवरी 2015 को कॉलेज के परिसर में सम्पन्न हुआ।

लगभग दस हजार आर्यजनों की उपस्थिति में आयोजन के मुख्य अतिथि, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने अपने संबोधन में जीवन को सुखी बनाने का मन्त्र देते हुए जीवन में चार 'सा' उतारने को प्रेरित किया। संस्था, स्वाध्याय, सत्संग और सेवा। मान्य प्रधानजी ने अपने अनुभव के आधार पर बताया कि यदि जीवन में व्यक्ति उस परमात्मा का ध्यान करने, उससे बातें करने, उसके आगे अपनी मनोव्यवस्था कहकर एक संधि स्थापित करता है तो उसके जीवन में एक विशेष परिवर्तन आता है। स्वाध्याय की महिमा ओर इसके वास्तविक अर्थ के विभिन्न आयाम प्रस्तुत करते हुए उन्होंने स्वाध्याय की आवश्यकता पर बल दिया। सत्य के संग को सत्संग बताते हुए कहा कि इससे अंत:करण और आत्मा शुद्ध होती है और परलौकिक शक्ति का उदय होता है। सेवा को अहंकार-नाशिनी बताते हुए मान्य प्रधान जी ने कहा कि सेवा से एक अलौकिक सुख प्राप्त होता है।

इससे पहले 150 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यमुना नगर एवं आसपास की अनेक आर्य समाजों से आए आर्यजन यजमान बने। डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स की छात्राओं ने यज्ञ-प्रक्रिया में एक विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया था जिसके चलते उन्होंने इस विशाल यज्ञ में बहुत ही सार्थक योगदान दिया। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के

प्राचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने ब्रह्मा के रूप में इस यज्ञ का सफल संचालन किया और यज्ञ की अनेक बारीकियों का स्पष्टीकरण देते हुए लोगों के मन में यज्ञ के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करने का सफल प्रयास किया। इस अवसर पर 31 जरूरतमंद महिलाओं को शॉल और एक-एक क्विंटल अन्न श्रीमती मणि सूरी जी के हाथों प्रदान किया गया जिसने इस पूरे आयोजन को सेवा प्रकल्प से जोड़ दिया। स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर आधारित एक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई जिसमें ऋषि की जीवन-गाथा को बहुत ही कलात्मक ढंग से 350 छात्राओं ने प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति का निर्देशन श्री अजय ठाकुर जी ने किया था।

इस आयोजन से एक दिन पूर्व 27 फरवरी 2015 को कॉलेज

सभागार में एक वेदकथा का आयोजन किया गया जिसका विषय था, 'जीवन का क्रिया योग।' अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त दार्शनिक डॉ. वागीश

(शेष पृष्ठ 17 पर)

बाल्यकाल को मुक्त रखें.... तनाव से

''कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन'' उपरोक्त पंक्तियों किसी कवि ने अपने बाल्यकाल को स्मरण करते हुए क्या खूब लिखी हैं। आज के सामाजिक जीवन में तनाव बिना किसी मूल्य के मिलता है, हर गली, हर कूँचे पर मिलता है, हर वन-उपवन में मिलता है। आज तनाव हमारे जीवन का ऐसा अंग बन गया है कि व्यक्ति को इस बात का भी तनाव है कि उसे कोई तनाव नहीं है।

ऐसी स्थिति में बाल्यकाल को लौटाने की प्रार्थना करना स्वाभाविक ही है क्योंकि बाल्यकाल ही ऐसी अवस्था है जो पूर्णरूप से तनाव मुक्त है। खेलने-कूदने की स्वतन्त्रता, मौज-मस्ती का समय, माता-पिता का वर्चस्व, कई ऐसे कारण हैं जिनसे बाल्यकाल में व्यक्ति स्वतन्त्र व मुक्त होता है। न धनोपार्जन की चिन्ता, गृहस्थ का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हुए महत्त्व न देना भी गृहस्थ की किसी जिम्मेदारी का सहभागी न होना ही बाल्यकाल का तनाव मुक्त होने का एक विशेष कारण है। यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें माता-पिता भी अपने बच्चों को तनाव से मुक्त देख प्रसन्न होते हैं और स्वयं भी उन्हें तनाव मुक्त होने का कारण बनाते हैं।

आपने और हमने अपने जीवन में कई बार अनुभव किया होगा कि थकावट से चूर तनावग्रस्त जब हम घर लौटते हैं तो बच्चों का माता-पिता के पैरों में लिपट जाना, प्यार से माँ या पिताजी पुकारना, उनका दुलार से कंधों पर चढ़ जाना यह हमें और आपको तनाव से मुक्त करता है।

ऐसे माता-पिता की भी संख्या बहुत अधिक है कि जिन्होंने अपने कारणों से ही बच्चों पर तनाव लाद दिये हैं। समाज का ढाँचा इस प्रकार बन गया है कि प्रत्येक घर में, प्रत्येक पड़ोस में, प्रत्येक मिलने-जुलने वालों में एक-एक प्रतिस्पर्धा की भावना ऐसी बन गई है कि आपका बच्चा किस विद्यालय में पढ़ता है और आपके परिचित का बच्चा किस विद्यालय में पढ़ता है इसमें भी प्रतिस्पर्धा है। तीन से पाँच वर्ष के बच्चों को विशेष प्रशिक्षण दिलवाया जाता है कि ताकि बड़े नाम वाले विद्यालय में उसको प्रवेश दिलवाया जा सके। हर समय उस बच्चे के दिमाग में तुम्हें अच्छी तरह से साक्षात्कार देना है का दबाव डाला जाता है। साक्षात्कार ठीक न होने पर उस छोटे से मासूम बच्चे पर अपना रोष भी व्यक्त किया जाता है। बच्चा इतनी कम आयु में इसी तनाव में रहता है कि कुछ माह पूर्व तक जो माता-पिता दुलार से, प्यार से पुकारते थे, मेरे हर एक इच्छा को पूर्ण करते थे, आज वही मेरे से रूष्ट है, बच्चा तनाव में आ जाता है जिसका माता-पिता को पता भी नहीं लगता, लेकिन बालक के अन्दर ही रोष की भावना विकसित होती रहती है, जिससे उसके मन और मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है।

विदेशों में खोज करने के बाद मनोवैज्ञानिकों ने इसे भी एक प्रकार की बीमारी का नाम दिया है जो बाल्यकाल की अवस्था में पाई जाती है जिसे वह डिसलेक्सिया के नाम से पुकारते हैं। इसके लक्षण कई वर्षो के उपरान्त युवावस्था में जाकर ही पता लगते हैं। माता-पिता बाल्यकाल में ही नहीं जैसे-जैसे बच्चा युवावस्था की ओर बढ़ता है वैसे-वैसे उससे परीक्षा में अधिक अंक लाने का दबाव डालते हैं, अच्छा विषय न मिलने पर रोष व्यक्त करते हैं और बड़ा होने पर उच्चस्तरीय शिक्षा में प्रवेश न पाने पर भी बच्चों को तनाव ग्रस्त करते हैं। माता-पिता से प्रार्थना है कि बाल्यकाल को उसके मौलिक रूप में ही रहने दें और बच्चों को तनाव मुक्त रखें। विश्वभर में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ पढ़ाई में, परीक्षा में उत्तीर्ण न होने वाले या कम अंक से उत्तीर्ण होने वाले बालकों और युवाओं ने शिक्षा के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में बहुत उन्नति कर कई कीर्तिमान स्थापित किये।

हम आपको अमेरिका के चार ऐसे युवकों की बात बताते हैं, जिन्हें हाथ से निकला मान लिया गया था। एक को उसके अध्यापक ने इसलिए पीटा क्योंकि उसके कम अंक आए थे और उसका दिल पढ़ाई में नहीं लगता था। 16 साल की उम्र में उसने पढ़ना छोड़ दिया। दूसरा विशेष अंग्रेजी में फेल हो गया ओर कॉलेज में भी फेल होने के कगारपर था। तीसरा डरता था कि वह स्कूल की पढ़ाई शायद पूरी न कर पाए और ट्यूटर की मदद के बिना शायद वह यह कर भी न पाता। चौथा तीसरी कक्षा में आकर पढ़ना सीख पाया।

कभी के ये चार बर्बाद लड़के आज क्रमशः रिचर्ड ब्रैसन, चार्ल्स श्वाव, जॉन चैंबर्स और डेविड ब्वॉइस हैं। अरबपति ब्रैसन ने वर्जिन रेकॉर्डस और वर्जिन एटलांटिक एयरवेज के जरिये ब्रिटेन के सबसे प्रसिद्ध ब्रांडो में से एक को स्थापित किया है। ब्वॉइस वह प्रसिद्ध वकील है जिसने माईक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कम्प्यूटर दिग्गज कम्पनी को मुकदमे में हराया। श्वाव तो डिस्काउंट व्यापार के जनक ही हैं। चैम्बर्स सिस्को के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं।

तनाव के दुष्परिणामः जो बच्चे तनावग्रस्त होते हैं, वे स्वयं में ही घुटते रहते हैं। धीरे-धीरे ऐसे बच्चों में हकलाहट, चिड़चिड़ापन, बार-बार पेट में दर्द होना, खड़े-खड़े पूरा शरीर गर्म हो जाना, हर समय एक अनिश्चितता सी बनी रहना, चुपचाप रहना जैसे लक्षण घर कर जाते हैं। कुछ बच्चे तो बेहद असभ्य तथा अशिष्ट हो जाते हैं और उनका बर्ताव भी काफी अजीब रहता है, क्योंकि अपनी प्रतिदिन की जिन्दगी के तनावों उलझनों के साथ वे सामंजस्य बिठाने में असफल रहते हैं।

समस्या का समुचित उपायः प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को बहुत चाहते हैं। वे जो कुछ भी करते हैं, उनकी भलाई के लिए ही करते हैं। बच्चों से माता-पिता को बहुत सी आशाएं होनी स्वाभाविक हैं, लेकिन ये आशाएं बच्चों की क्षमताओं की तुलना में अधिक न हों, इसका प्रत्येक माता-पिता को ध्यान रखना चाहिए। बच्चों से उनकी स्कूल सम्बन्धी कठिनाइयों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए और साथ ही उनके मनोरंजन का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। बच्चों के मन में स्वतः सोचने तथा निर्णय लेने की भावना पैदा की जाए और उन्हें रचनात्मक कार्यों में लगाया जाये। उन्हें तनावमुक्त रखने के लिए रचनात्मक तरीके अपनाये जा सकते हैं, जैसे अच्छी किताबें पढ़ने या किसी खेल में लगाए रखना बेहतर हो सकता है।

आर्य समाज से जुड़े परिवारों के पास तो बहुत सरल तथा उपयुक्त साधन है। बच्चों को आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में ले जावें। वहाँ होने वाले वेदाधारित प्रवचनों में भी उन्हें सम्मिलित करें और घर आकर उस विषय पर बालक से चर्चा करें और उस द्वारा किये प्रश्नों का उत्तर भी देवें। ज्ञान-विज्ञान की जानकारी से भी बालकों में तनाव रहित होने की चाहत आन्तरिक बनती है। आर्य वीरो के शिविर पूरे भारत में ग्रीष्मकालीन अवकाश में आयोजित होते हैं, इनमें भी बालकों एवं बालिकाओं को भेजने से तनाव मुक्त होने में सहायता ही मिलती है।

मनोवैज्ञानिक स्तर पर उपरोक्त सारे तरीके बच्चों के मन में आत्मविश्वास ओर आत्मसंयम पैदा करके तनाव को दूर करते हैं। निःसन्देह बच्चों की इस तनावग्रस्त समस्या को, उनकी पूरी जिन्दगी के साथ अन्याय करना होगा। बच्चों की यह समस्या कोई लाइलाज नहीं, सिर्फ आपका प्यार-दुलार और संतुलित लगाव ही उनकी इस समस्या का बेहतर इलाज है।

अजय टंकारावाला

लुधियानावासियों की टंकारा यात्रा

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी कई वर्षो से महर्षि स्वामी दयानन्द जी की जन्मस्थली टंकारा जाने के लिए लोगों को प्रेरणा देते आ रहे हैं। इसी श्रृंखला में पिछले वर्ष (2014) में जिला आर्य सभा, लुधियाना की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा, महामन्त्री श्री विजय सरीन एवं उपप्रधाना श्रीमती विनोद गांधी जी के साथ आर्य समाज दाल बाजार के तीन युवा सदस्य श्री संजीव चड्डा, सुरेन्द्र टंडन एवं रमाकांत महाजन टंकारा यात्रा पर गए। इस यात्रा का इन युवकों पर इतना प्रभाव हुआ कि इन्होंने टंकारा में ही यह संकल्प लिया कि अगले वर्ष (2015) के ऋषिबोधोत्सव पर लुधियाना से कम से कम पचास ऋषि भक्तों को साथ लेकर टंकारा आएंगे। इसी निश्चय को क्रियान्वित करने के लिए ऋषि बोधोत्सव के तीन मास पूर्व ही एक आर्य टंकारा यात्रा समिति, लुधियाना का गठन किया गया। इन तीन सदस्यों के अतिरिक्त श्री आत्म प्रकाश प्रधान आर्य समाज दाल बाजार, डॉ. विजय सरीन एवं श्रवण कुमार बत्रा इस समिति के सदस्य बनें। इसी के साथ इन सदस्यों ने ऋषि भक्तों को टंकारा जाने के लिए उत्साहित करना प्रारम्भ कर दिया। 12 फरवरी 2015 को 62 यात्रियों का जत्था टंकारा रवाना होने के लिए लुधियाना रेलवे स्टेशन पहुंचा। सभी यात्रियों को पीत वस्त्र तथा केसरी रंग की एक समान पगड़ियाँ पहनाई गई। इस अवसर पर भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के अधिकारी सफल एवं मंगल यात्रा के लिए शुभकामनाएं देने के लिए उपस्थित थे। रास्ते में जल-पान के लिए श्रीमती विनोद गांधी, अनुगुप्ता एवं राजेन्द्र बत्रा ने बंद पैकटों में समान दिया। श्री देवपाल, महेन्द्र विज, राजेन्द्र बेरी, वेद प्रकाश महाजन, गौरव सरीन आदि महानुभावों ने ओ३म् के झण्डे फहराकर तथा जय घोष के साथ रेलवे स्टेशन को गुजायमान करते हुए इस यात्रा को रवाना किया। लुधियाना रेलवे स्टेशन पर यह एक मनमोहक एवं अविस्मरणीय दृश्य बना। दिल्ली स्टेशन पर कैलको कम्पनी के मालिक श्री रमेश अग्रवाल ने खाने-पीने के पैकेट भेंट किए।

गाड़ी में सारे रास्ते सभी ऋषि भक्तों ने ईश्वर भक्ति तथा महर्षि दयानन्द पर आधारित भजनों एवं जय घोष का कार्यक्रम निरन्तर चलाए रखा तथ प्रत्येक स्टेशन पर लोगों का ध्यान आकर्षित करते रहे। गाड़ी के प्रत्येक डिब्बे के बाहर यात्रा समिति ने पोस्टर चिपकाए। गाड़ी 13 फरवरी को दोपहर बाद तीन बजे अहमदाबाद पहुंची। वहां की प्रसिद्ध काकड़िया झील पर भ्रमण किया और आर्य समाज काकड़िया गए। वहां कुछ देर विश्राम कर पुनः स्टेशन पर पहुंच कर यात्री रात्री 10 बजे सोमनाथ के लिए रवाना हुए। ऐतिहासिक एवं दर्शनीय सोमनाथ मंदिर के साथ-साथ समुद्र का दृश्य देखकर दोपहर देढ़ बजे राजकोट के लिए रवाना हुए। सायं 5.30 बजे राजकोट स्टेशन पर यात्रियों को टंकारा ले जाने के लिए टंकारा ट्रस्ट द्वारा कुछ ब्रह्मचारियों के साथ बस पहले ही खड़ी थी। सभी यात्री उसमें बैठकर ऋषि गुणगान करते हुए रात्री 7.30 बजे ऋषि जन्म भूमि टंकारा पहुंचे। टंकारा ट्रस्ट ने लुधियाना यात्रियों के ठहरने के लिए श्री आर.बी. खन्ना, श्रीमती विनोद गांधी तथा यात्रा समिति लुधियाना के प्रयासों के कारण सभी के लिए उचित प्रबन्ध कर रखा था।

आदरणीय श्री रामनाथ जी सहगल के सुयोग्य सुपुत्र श्री अजय सहगल के कुशल नेतृत्व में टंकारा में भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों के साथ-साथ, खान-पान का भी टंकारा ट्रस्ट द्वारा उचित प्रबन्ध किया गया। सबने ऋषिबोधोत्सव टंकारा के 15 फरवरी प्रातःकालीन यज्ञ में सम्मिलित होकर आहुतियां अर्पित की। 12 बजे तक भजनों व प्रवचनों का आनन्द लिया। सायंकालीन यज्ञ के कार्यक्रम उपरान्त रात्री के सत्र में उपदेशक विद्यालय के बच्चों द्वारा आकर्षित कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। 16 फरवरी को प्रातः प्रभात फेरी, योग एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम के बाद प्रातः कालीन यज्ञ व उद्घाटन समारोह हुआ। डॉ. विनय विद्यालंकार जी का विशेष प्रवचन हुआ। दोपहर को प्रश्न मंच, व्यायाप प्रदर्शन और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। रात्री के सत्र में वैदिक परिवार सम्मेलन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन में डॉ. विनय विद्यालंकार एवं श्री एस.के. शर्मा मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा के प्रेरणादायक प्रवचन तथा श्री कुलदीप एवं कविता के मधुर भजनों को श्रवण किया। 17 फरवरी ऋषिबोधोत्सव वाले दिन प्रभातफेरी एवं यज्ञ की पूर्णाहूति के कार्यक्रम पश्चात ध्वजारोहण कार्यक्रम में लुधियाना टंकारा यात्रा समिति के सदस्यों ने भी मुख्य अतिथि को फूल मालाएं अर्पित की। तदोपरान्त विशाल शोभायात्रा का आयोजन हुआ जिसमें ऋषि के दीवानों ने झूम-झूम कर स्वामी दयानन्द के गीतों और जयघोषों से नगर को गुंजा दिया। लुधियाना वासियों ने अपनी मंडली के लिए अलग से लाउड स्पीकर की व्यवस्था की और उस पर बहुत ही उत्साह और उल्लास के साथ सामूहिक गीतों का अपना कार्यक्रम चलाया जिसे नगर वासियों तथा अन्य यात्रियों ने सराहा। स्थान-स्थान पर टंकारा निवासियों तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं द्वारा स्वागत व खाने-पीने का सामान बांट कर अपनी श्रद्धा-भव को प्रकट किया। दोपहर 3 से 5 की श्रद्धांजलि सभा में महा-महिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली (मुख्य अतिथि) ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा राष्ट्र की आजादी तथा समाज सुधार के कार्यो का उल्लेख करते हुए तथा वेदों की ओर लौटाने के लिए उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए नमन किया। सायं कालीन आर्य समाज टंकारा का 5 से 8 बजे तक आर्य वीर दल, टंकारा के बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम को देखकर मन बहुत प्रसन्न हुआ। रात्री सत्र में जिसकी अध्यक्षता श्री योगेश जी मुंजाल ने की। विद्वानों के उत्तम प्रवचनों के साथ-साथ श्रीमती कविता-कुलदीप शास्त्री एवं सत्यपाल पथिक जी ने बोधोत्सव की घटनाओं को भजनों के माध्यम से सुनाकर सबको मंन्त्र मुग्ध किया। आर्य टंकारा यात्रा समिति द्वारा 62 यात्रियों को टंकारा लेकर आने के लिए संजीव चड्डा को टंकारा ट्रस्ट द्वारा शाल भेंट कर सम्मानित किया गया।

18 फरवरी को यात्रा की वापिसी पर श्री सुखदेव जी आर्य द्वारा अहमदाबाद में दोपहर का भोजन, श्री वीरेन्द्र आर्य जी सुपुत्र श्री उत्तम चन्द जी शहर हजरत निजामुद्दीन में अल्पाहार और श्रीमती सुनीता खुराना एवं श्री पूर्ण चन्द खुराना (पुत्री एवं दामाद श्री मदन मोहन चड्डा, लुधियाना) द्वारा दोपहर का भोजन तथा श्रीमती शशि अहुजा की माता श्रीमती सुशीला गंभीर एवं भाई सुरेन्द्र गंभीर द्वारा फल भेंट किए गए। इन सभी महानुभावों को यात्रा समिति द्वारा सम्मान प्रतीक एवं पीत-वस्त्र देकर धन्यवाद किया गया। परमात्मा की असीम कृपा से सभी यात्री सकुशल 19 फरवरी रात्रि 8 बजे लुधियाना स्टेशन पहुंचे। श्रीमती शकुन्तला एवं श्री वेद-प्रकाश जी भण्डारी की पच्चासवीं वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में भण्डारी परिवार के बच्चों द्वारा सभी टंकारा यात्रियों को मिठाई बांटी गई, स्टेशन पर उपस्थित आर्य परिवारों के सदस्यों द्वारा पुष्प वर्षा की गई।

– आर्य टंकारा यात्रा समिति, लुधियाना

विश्व संगठन के वैदिक आधार-मैत्री और समता

❒ स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त-''योग्यतम की जीत''। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वहीं संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता हैं। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है-''अश्रद्धा मनृत्ये दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।''

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करूणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यो को पाया। वेद का मन्त्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करूणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार हैं।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त ''योग्यतम की जीत'' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार ''उपनिवेशवाद'' को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग ऑफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षो में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त ''संयुक्त राष्ट्र संघ'' (यू.एन.ओ.) का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से समाने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ7बूझ, मैत्री और समता दिखाी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अर्न्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किन्तु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार-वीटो संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें, रूपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार ''क्रय शक्ति की समानता''। (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होनी चाहिए। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद् आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएं हैं। ये निर्बलताएं विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है।

वैदिक आदर्शो के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है-

''सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद दुःख भाग भवेत्।।''

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतन्त्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रथम देते हैं। वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है-

''मित्रस्य मा चक्षुसा सर्वोणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें। इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने। संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणाः-वेदों के मर्मज्ञ विद्वान स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया हे।-''ऋग्वेद का मण्डल-मणि-सूत्र''। ऋग्वेद में दस मण्डल हैं। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

- ईशावास्यम्, पी-30, कालिन्दी हाऊसिंग एस्टेट, कोलकाता-700089

गाय, गंगा, गायत्री की अन्यों से विशेष मान्यता क्यों?

❐ खुशहाल चन्द्र आर्य

गाय, गंगा, गायत्री ये तीनों अपने-अपने स्थान पर सबसे श्रेष्ठ, सर्वोत्तम व सर्वोच्च हैं। इनको हिन्दू धर्म यानि वैदिक धर्म में बहुत बड़ा महत्व ही नहीं बल्कि पूज्य माना गया है। हिन्दू धर्म ने जिन-जिन को मान्यता दी है। वह उनके गुणों व उसके महत्व को देख कर दी है। जैसे वृक्षों में पीपल, पौधों में तुलसी, पशुओं में गाय, पक्षियों में हंस, पहाड़ो में हिमालय नदियों में गंगा, वैदिक मन्त्रों में गायत्री। इन सबके पीछे इनके गुणों का पूरा इतिहास छिपा हुआ है। हम यहाँ केवल गाय, गंगा व गायत्री की मान्यता क्यों है, इसका संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

1. गाय:- गाय को ईश्वर ने मनुष्य जाति को एक पशु के रूप में जैसे अन्य पशु भैंस, खोड़ा, बकरी, हाथी दिया है वैसे नहीं दिया बल्कि एक उपहार के रूप में दिया है, जिसको देकर ईश्वर ने मनुष्य जाति पर बड़ा उपकार किया है। कारण गाय मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा साथी या सहयोगी है जिससे मनुष्य अपने जीवन को उन्नत व समृद्धिशाली बनाता है, जिसके कारण वह अपने मन, बुद्धि, शरीर व आत्मा को बलिष्ठ तथा पवित्र बनाता है। गाय से उत्पन्न सभी पदार्थ ही नहीं बल्कि गाय का रोम-रोम मनुष्य के लिए लाभकारी है। गाय एक चलती-फिरती फैक्टरी है जिसका उत्पादन सस्ता व सुलभ है। कम परिश्रम में अधिक लाभ, गाय मनुष्य को देती है। गाय से अनेक लाभ हैं जिनमें कुछ लाभ यहां लिखते हैं।

गाय के दूध, घी, मखन व पनीर से अनेकों किस्म की मिठाईयाँ बनती है जिनको खाकर मनुष्य स्वयं आनन्दित होता है तथा अपने अतिथियों व बरातियों को भी आनन्दित करता है। गाय के गोबर व मूत्र से उच्चतम् खाद बनती है, जिससे उत्पन्न हुआ अनाज स्वादिष्ट व पोष्टिक होता है और जमीन भी उर्बरा होती है। कैमिकल से बनी यूरिया खाद से गाय के गोबर व मूत्र से बनी जैविक खाद कहीं अच्छी होती है। यूरिया खाद से जमीन की उर्बरा शक्ति हर साल कम होती जाती है जब कि जैविक खाद से जमीन की उर्बरा शक्ति बढ़ती जाती है। जब से भारत में यूरिया खाद का प्रयोग होने लगा है तभी से मात्रा में चाहे अनाज अधिक पैदा होने लगा हो परन्तु स्वादिष्ट व गुणचक्र न होने से भारतीयों का स्वास्थ्य कमजोर हुआ है। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। यहां की 70 प्रतिशत जनता गांवो में रहकर कृषि करती है। देश में जब से यूरिया खाद का प्रयोग अधिक हुआ है तब से देश को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। खुशी की बात है कि अब कुछ वर्षो से सरकार तथा जनता का ध्यान यूरिया खाद का प्रयोग कम करने में और जैविक खाद का प्रयोग बढ़ाने में हुआ है। ईश्वर की कृपा बनी रही तो भविष्य में इस भावना को बल मिलेगा। इसके अलावा गाय के गोबर व मूत्र से कई प्रकार के सामान बनते हैं। जिनमें साबुन, सैम्पो, अगरबत्ती व फिनाईल आदि मुख्य हैं। गाय के गोबर व मूत्र से कई किस्म की दवाईयां बनती है, यहां तक कि कैन्सर की दवाई भी बनती है। इनसे बनी दवाईयां काफी उपयोगी सिद्ध हुई हैं। गाय का मूत्र नित्य सेवन करने से मनुष्य काफी बीमारियों से बच सकता है। यदि हम गो रक्षा करना चाहते हैं तो हमें गाय द्वारा उत्पादित खाद, सामान तथा दवाईयों का प्रयोग अधिक करना होगा जिससे गाय की उपयोगिता बढ़ेगी। यदि हम एक बूढ़ी गाय या बैल के गोबर और मूत्र का प्रयोग भली-भांति करें तो हम बूढ़ी गाय या बैल से नित्य पच्चास रूपये कमा सकते हैं और उनके ऊपर नित्य का खर्च अधिक से अधिक तीस रूपये होगा। इस प्रकार एक बूढ़ी गाय या बैल से हम कम से कम बीस रूपये नित्य कमा सकते हैं? यदि ऐसी व्यवस्था सरकार या संस्थाओं द्वारा हो जाये तो कोई भी किसान उनको कटने के लिए कसहियों को नहीं बेचेगा, तभी गो-वंश की रक्षा होनी सम्भव है कारण दूध देने वाली गाय और हल चलाने वाले बैल को तो कोई बेचता ही नहीं।

सबसे बड़ी खूबी गाय में यह है कि गाय की चमड़ी में एक ऐसा आकर्षण है कि वह सूर्य की किरणों से एक प्रकार की ऊर्जा खेंचती है और वह ऊर्जा उसके दूध में आने से पीने वालों को बड़ा लाभ होता है। यही कारण है कि गाय के घी में जो एक पीलापन दिखाई देता है, वह सूर्य की किरणों का अंश है। गाय के दूध में भी कुछ पीलापन होता है, उसका कारण भी यही है। इस प्रकार गाय अनेक किस्मों से मनुष्य के लिए लाभकारी है, जिसका पूरा विवरण करना भी असम्भव है। ऐसे उपयोगी और लाभकारी पशु को हम काटकर खाते हैं या काटने के लिए बेच देते हैं। यह मानवता के ऊपर एक बड़ा कलंक है। हमें ऐसे कुकृत्यों से सदा बचना चाहिए। तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी बनेंगे।

2. गंगा:- गंगा नदी सब नदियों से अधिक पवित्र व श्रेष्ठ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य है, वह यह है कि इसके पानी में कभी भी कीड़े नहीं पड़ते जबकि अन्य नदियों के पानी में कीड़े बहुत जल्दी ही पड़ जाते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि गंगा नदी हिमालय पर्वत के गो-मुख से निकलकर हिमालय के अन्दर ही अन्दर कई किस्म की जड़ी-बूटियों से स्पर्श करती हुई आती है, इसलिए जड़ी-बूटियों के प्रभाव से गंगा का पानी इतना पवित्र व रोग विनाशक हो जाता है, जिसमें कीड़ा नहीं पड़ता। पर गंगा में नहाने से सब पाप घुल जाते हैं, यह एक अन्धविश्वास है। गंगा में नहाने से शरीर शुद्ध होता है, पर आत्मा शुद्ध नहीं होती। आत्मा की शुद्धि तो शुभ कर्म करने, आचरण पवित्र रखने तथा ईश्वर की उपासना करने से ही होगी। इसलिए हमें गंगा नदी के प्रति किसी प्रकार का अन्धविश्वास नहीं पालना चाहिए। कई अन्धभक्त गंगा के पास खड़े होकर हाथ जोड़ते हैं, पैसे फेंकते हैं, सह सब निरर्थक है, केवल एक अन्धविश्वास है और कुछ नहीं।

3. गायत्री:- वैसे तो वेदों के सभी मन्त्र सार्थक एवं उपयोगी हैं परन्तु गायत्री मन्त्र अन्य मन्त्रों से अधिक लाभदायक है। इसीलिए इसको गुरु मन्त्र व महामन्त्र भी कहा गया है। अन्य मन्त्रों में तो हम किसी में धन-वैभव के स्वामी होने की याचना की है, ''किसी में अपने दु:खो, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को दूर करके अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव की प्राप्ति के लिए याचना की है। परिवार को सुखी बनाने की याचना की है, परन्तु गायत्री मन्त्र में सुबुद्धि प्राप्ति की याचना की है जो सर्वोत्तम याचना है। सुबुद्धि आ जाने से बाकी सभी चीजें स्वयं ही आ जाती हैं इसलिए गायत्री मन्त्र का अन्य मन्त्रों से अपना अलग ही महत्व है, इसलिए गायत्री मन्त्र को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में अपना एक अलग ही स्थान प्राप्त है।

- 1180 महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकत्ता-700007, मो. 9830135794

नारी अस्मिता

❒ डॉ. धर्मवीर सेठी

मैं अपना आलेख मनुस्मृति के अधोलिखित श्लोक से आरम्भ करना चाहता हूं जो समस्त नारी जाति के सम्बन्ध में अति समीचीन है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ये रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रऽफला: क्रिया।।3/56।।

भावार्थ: जिस गृहस्थ, जिस समाज, जिस राष्ट्र में नारी जाति का पूर्ण-रूपेण आदर सत्कार एवं सम्मान होता है, उस गृहस्थ, समाज और राष्ट्र पर सभी देवी-देवताओं का वरद-हस्त रहता है अर्थात् वहां शान्ति और प्रगति का माहौल बना रहता है और जहां मातृ-तुल्य नारी का अनादर होता है, वहां किसी प्रकार का शुभ-लक्षण दिखाई नहीं देता।

हम इस अक्षरश: सत्य-कथन को निरन्तर पढ़ते और सुनते चले आ रहे हैं परन्तु वाह रे मानव: तुम कितने स्वार्थी बन गए हो कि मां की कोख में पलने वाली सन्तति का लिंग जानने के इतने उतावले बन जाते हो कि उसका अल्ट्रा-साऊँड कराने में तुम जरा भी नहीं हिचकिचाते। यदि वह सन्तति पुल्लिंग दिखाई दिखाई दे तो तुम प्रसन्न परन्तु यदि वह स्त्रीलिंग ज्ञात हो तो न जाने तुम पर कितने पहाड़ टूट पड़ते हैं। ऐसा क्यों? क्या तुम्हें प्रसन्नता नहीं होनी चाहिए कि तुम्हारे परिवार में 'लक्ष्मी' आ रही है, एक देवी का आगमन हो रहा है।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।

वह लक्ष्मी हो सकती है, पार्वती हो सकती है, सरस्वती हो सकती है, वीणा-वादिनी हो सकती है। कवि तो, उससे वरदान मांगता है-'वीणा वादिनी वर दे' और तुम! ऐसे कृतहन हो कि प्रभु द्वारा प्रदत्त सन्तति को इसलिए धिक्कारते हो कि वह कन्या है।

याद रखो 'कन्या भ्रूण-हत्या करना के बल पाप ही नहीं, महापाप है, ऐसा अभी हाल में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा भी काशी में एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा गया था।

बेटी मारे कोख में, माता पूजन जाए।
किस मुख ऐसी नगर को जननी बोला जाए।।

माता वैष्णो देवी के दर्शन करने जाने से क्या लाभ यदि तुम उसकी सन्तान (पुत्र) की रक्षा नहीं कर सकते। इस लिए ऐसे पूजा स्थलों पर जा कर भक्त और संस्कारवान बनने का ढोंग तो न करो। कन्या भ्रूण हत्या का विषय समाज और राष्ट्र के लिए एक गम्भीर समस्या बनी हुई है क्योंकि इससे लिंगानुपात में असन्तुलन बना रहता है। पुत्र की वाञ्छा करने वाले दम्पति ध्यान दें कि

ओस की बूंद सी होती है बेटियां।
जरा भी दर्द हो तो रोती है बेटियां।।
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को।
दो-दो बुलों की लग्न बचाती है बेटियाँ।।

इसी भाव को आंगल-भाषा में कैसे सार रूप में व्यक्त किया गया है- 'A son is a son till he gets a wife a Daughter is Daughter all her life' क्या पाता वह बेटी बड़ी होकर कल्पना चावला बन अन्तरिक्ष में उड़ान भरती, सायना मिर्जा बन खेल के मैदान में अपना और अपने देश का सम्मान बढ़ाती।

बेटियों की शिक्षा की बात जब चलती है तो दकियानूसी समाज प्राय: यह उद्धारण प्रस्तुत करता है 'स्त्री शूद्रौ न धीयाताम्'' अर्थात् स्त्री और शूद्र को शिक्षा ग्रहण करने और वेदादि पढ़ने का कोई अधिकार नहीं। हमारे समाज की यह कैसी मनोदशा थी कि जो पत्नी (स्त्री) गृहस्थी को चलाने वाली है। वह अनपढ़ रहे। तभी इसका विरोध हुआ। आर्य समाज के पुरोंधा और संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हुंकार भरी और कहा कि स्त्री और पुरुष दोनों को पढ़ने का समान अधिकार है। वेद का मन्त्र कहता है:' इदं मन्त्रं पत्नी पठेत्-इस मन्त्र को यज्ञ के समय पत्नी पढ़े।

ऋषि दयानन्द इसी प्रसंग में शिक्षक-त्रयी की चर्चा करते हैं-मातृमान् पितृमानाचार्णवान् पुरुषो वेद' (शतपथ ब्राह्मण 14.08.5.2)-सर्वप्रथम शिक्षक माता, तदनन्तर पिता और फिर किसी शिक्षण संस्था (गुरुकुल) के आचार्य की बारी आती है। शिक्षण-त्रयी में माता का स्थान सर्वोपरि कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि महर्षि नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। यदि वह स्वयं शिक्षित नहीं होगी तो बालक को शिक्षित कैसे करेगी? स्त्री शूद्रौ नाधीयातामिति श्रुते:' कहने वालों को ऋषिवर आड़े हाथों लेते हैं'' तुम कुएं में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोल-कल्पना से हुई है, किसी प्रमाणिक ग्रन्थ की नहीं।'' मात्र प्रामाणिक ग्रन्थ वेद में कन्याओं के पढ़न्े का प्रमाण उन्होंने अथर्ववेद (11.24.3.18) से प्रस्तुत किया है ''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्''। इसलिए जो स्त्री न पढ़े तो कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका क्यों कर हो सके। ऋषि परिचित थे उस युग की विचारधारा से जब नारी की नरक का द्वारा कहा जा रहा था उसकी पदे-पदे भर्त्सना की जाती थी, उसे हेय समझा जाता था। परन्तु खेद है भारतीय समाज भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी, मैत्रेयी सरीखी विदुषियों को भूला हुआ था। अस्तु! ऋषि ने न केवल नारी जाति की मान-मर्यादा की रक्षा की अपितु राष्ट्र का निर्माण करने वाली उत्तम कोटि की शिक्षिकाओं की आवश्यकता पर भी बल दिया।

सती प्रथा नारी जाति के लिए एक और अभिशाप था। स्वामी दयानन्द के पूर्व राजा राम मोहन राय ने निर्दयी और रूढ़िवादी समाज के द्वारा अपने बड़े भाई जगत् मोहन की मृत्यु के उपरान्त उनकी, पत्नी (अपनी भाभी) को चिंता में जीवित जलाने का, पाषाण हृदय को भी द्रवीभूत करने वाला, दृश्य जब देखा तो वह सिह उठे। राजा राम मोहन राय ने जब यह अमानुषी काम अपनी आंखो से देखा तो विरोध करते हुए सन् 1829 में उन्होंने कानून बनवा कर इस प्रथा का बन्द करवा दिया।

बाल विवाह और विधवा विवाह स्वामी दयानन्द के समय में ऐसे रोग थे जो हिन्दू जाति को शनै:शनै: निर्बल बना रहे थे। स्वामी जी ने बाल विवाह का घोर विरोध किया और विधवा विवाह होना चाहिए। इसकी जमकर वकालत की।

स्त्री जाति की पवित्रता में ही देश की उद्धार तथा नारी जाति के पतन में देश का पतन होना निश्चित है। आधुनिकता की चकाचौंध भरी दौड़ में नारी वर्ग को अधिक सचेत रहने की आवश्यकता है। वस्तुत: स्त्री को पति का अर्धाड़ माना है (अर्द्धांगिनी)। उनको घर की स्वामिनी एवं सारे परिवार की निरीक्षिका माना है। उनके पातिव्रत्य को भारतवर्ष का मुख्य उज्जवल करने वाला माना गया है। नारी को अबला एवं निर्बला नारी की मानसिकता से उबर कर साहस एवं संकल्प के साथ स्वावलम्बी

बनना पड़ेगा। स्वावलम्बन से नारी अनेक प्रकार षड्यन्त्रों एवं बन्धनों से निकल सकती है। पुरुष प्रधान समाज में नारी को कई प्रकार की जंजीरों से जकड़ दिया गया है, जिससे उसकी मानसिकता भी कुछ उसी प्रकार की हो गई है। सत्य तो रहा है कि समय ने करवट ली है और बदलते हुए परिवेश में नारी को एक खुला एवं स्वतन्त्र आसमन मिला है जहां वह अपनी आर्थिक निर्भरता के साथ आन्तरिक और बाह्य विकास कर सकती है। ऐसे समय में नारी को अपनी सूझ-बूझ एवं विवेक से आने वाली चुनौतियों का सामना करना चाहिए क्योंकि उसके सामने चुनौतियां कम नहीं है। इस सम्बन्ध में प्रायः नारी सशक्तिकरण की चर्चा आजकल अधिक होती है। सशक्तिकरण शब्द एक तुलनात्मक शब्द है, इसलिए इसे परिभाषित नहीं किया जा सकता। देवसुर संग्राम में असुरो को परमस्त करने के लिए देवताओं को भी नारी के दुर्गा रूप की आवश्यकता पड़ती है। दुर्गा ही समय पर चंडी, काली, महाकाली बन असुरों का बध करके देवताओं को अच्छी स्वतन्त्रता बहाल करती रही।

समाज के निर्माण में स्त्री का योगदान सराहनीय रहा है क्योंकि नारी किसी भी तरह पुरुष से कम नहीं है बल्कि ईश्वर ने दोनों को एक दूसरे का पूरक बनाया है न कि प्रतिद्वन्दी। फिर भी आधुनिक परिवेश में शायद स्त्री की सामंती मानसिकता देखने को मिलती है। परन्तु नारी सशक्तिकरण की गलत दिशा के कारण पूरे समाज तथा मानवीय मूल्यों का अशक्तिकरण हो रहा है। जिसका परिणाम शायद अच्छा न हो। अस्तु! नारी सशक्तिकरण की दिशा ऐसी होनी चाहिए कि घर बचा रहे, नारी और पुरुष के बीच के सम्बन्ध मैकेन्किल न हों। इस आलेख का समापन एक कवि की इन पंक्तियों से करना चाहूंगा।

तुम जननी नहीं हो केवल मेरे पार्थिव शरीर की ही,
हो रचयिता मेरे भाव जगता के उस चिन्मय स्वरूप की भी।
जिसकी जागृति पर होता है मनुष्य को उत्तम साक्षात्कार
और व्यक्ति बन जाता है नर से नारायण
शुचिता, पवित्रता, स्नेह का आगार हो तुम
वात्सल्य का मूर्तिमंत स्वरूप हो तुम
इसीलिए पूजित हो, वन्दित हो, अभिनंदित हो।

- वरेण्यम्, ए-1055, सुशान्त लोक-1, गुड़गांव

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आत्मिक दर्द

❑ पं. उम्मेद सिंह विशारद

जन साधारण का विचार है कि परमात्मा अवतार धारणा करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं, यह अज्ञान है, क्योंकि अजन्मा, अव्यय, निराकार, सृष्टिकर्ता ईश्वर साकार कैसे हो सकता है। किन्तु यह भी सत्य है कि मोक्ष से लौट कर मुक्त आत्मा अधर्म का नाश करने के लिए संसार में जन्म लेती है। संसार में मुख्य जन्म दो प्रकार का होता है। एक कर्मबद्ध जीवन और दूसरा कर्मो के बन्धनों से मुक्त जीवन। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम योगीराज श्रीकृष्ण में व महर्षि दयानन्द सरस्वती में अन्तर था तो वह यह था कि श्री राम व श्री कृष्ण जीवन भर सत्य के लिए लड़े, कामनाओं के लिए लड़े तथा महर्षि दयानन्द ऋत सत्य व निष्काम के लिए लड़े व मरे। यह विचारणीय बात है।

इस लेख में मैंने कुछ महर्षि दयानन्द जी के आत्मीय दर्दो का उल्लेख किया है। सुधी पाठक प्रेरणा अन्यों को भी प्रेरित करेंगे।

नरबली अंधविश्वास का दर्द- महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि एक दिन की घटना को मैं भूल नहीं सकता। शाम होने वाली थी, सामने नदी थी और अमावश्य की रात जाने वाली थी, सोचा रात किस रूप में बिताऊँ। इतने में दूर से आवाजें आ रही थी, एक दस वर्ष के बालक को लोग नहला रहे थे और स्त्री पुरुष नाच रहे थे, मैं जिज्ञासावश वहाँ पहुँचा, पता चला आज अमावश्य है और महाकाली की गुफा में मध्य रात्री को इस बालक की बलि दी जायेगी। इसके माता-पिता का वंश धन्य हो जायेगा और इसके पिता को पुजारियों ने पचास रूपये दिये थे और मान्यता थी कि यह बालक देह छोड़कर गन्धर्व लोक चला जायेगा।

इस बात को सुनकर मेरे मन में तीन चिन्ताएँ हुई-

❑ मेरी माता ने मुझ पुत्र को खोकर ही देहत्याग किया था। यह माता अपने बालक का बलिदान कैसे जीवित रहेगी। ❑ इस महापाप के दण्ड भोग के लिए ही हमारी पुण्य भूमि धीरे-धीरे विदेशी वणिकों के कंवत्रे में जा रही है। ❑ धर्म के नाम पर ऐसे महापाप ऋषि मुनियों के देश में कैसे चालू हो गये। यह काल भैरव मन्दिर फतेहपुर के धर्मपुरी पुनघाट में स्थित है। इस शोभा यात्रा में मैं भी चलने लगा। अवसर देखकर पुरोहित से कहा इस बालक को छोड़ दो और मेरी बलि दे दो। मैं भी ब्राह्मण पुत्र हूँ। पुजारी बोले बड़े पुजारी की आज्ञा से ही विचार किया जा सकता है। वहाँ भयंकर भीड़ थी, प्रचार आदमी नंगी कटार लेकर नाच रहे थे। मेरी प्रार्थना स्वीकार हो गयी। मुझे नहला कर कुमकुम लगाया गया। खड्ग की पूजा हुई। काल भैरव के सम्मुख काठ की वेदी में मेरा सिर रखकर पुरोहित पाठ करने लगे। चारों ओर काल भैरव की जय के नारे लगने लगे। मैं चारों ओर देखकर मरने के लिए तैयार हो गया। पुरोहित के कान में मुंह लगाकर मन्त्र पाठ किया और खड्ग घातक के हाथों में दे दिया। मेरी आँखों में कसकर पट्टी बाँधी गयी, बस बलिदान बाकी था।

लेकिन अचानक बन्दूक की तीन गोलियों की आवाज आयी, साथ ही लोग भागने लगे, चिल्लाकर कहने लगे, मरहटी फौज आ गयी है। सभी भाग गये। मैं अकेला बलिदान लकड़ से बंधा रह गया। उसी समय सिपाहियों ने मुझे मुक्त कर दिया। पता चला महाराष्ट्र सरकार ने बलि प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा रखा है और यह अमावस्या में मन्दिरों में भ्रमण करते हैं। मैंने ईश्वर से कहा हे प्रभु मुझसे क्या कराना चाहते हैं। जो कि आप बार-बार मुझे प्राण दे रहे हैं।

गंगा किनारे घटिया घाट की घटना का दर्द:- महर्षि दयानन्द एक बाद फर्रूखाबाद के निकट घटिया घाट के किनारे ध्यान मग्न बैठे थे। उसी समय एक स्त्री अपने मरे हुए बच्चे को लेकर आयी और उसने अपने मरे हुए बच्चे को पानी में डाल दिया। छपाक की आवाज से महर्षि का ध्यान उस ओर गया और देखा कि वह स्त्री बच्चे का कफन उतार रही है। कफन उतार कर चलने लगी तो महर्षि हाथ जोड़कर कहा मां गंगा में क्या डाल दिया। उस स्त्री ने रोते हुए कहा कि यह मेरा लड़का है। मैं विधवा स्त्री हूँ, निर्धन हूँ। धनाभाव से इसका इलाज न करा सकी। महर्षि ने कहा, जिस ईश्वर ने दुःख दिया, वही सुख भी देगा। परन्तु आपने कफन क्यों उतारा है। स्त्री ने कहा मैं निर्धन हूँ कफन के लिए मेरे पास धन नहीं था। इसलिए अपनी साड़ी को आधा फाड़कर कफन बना लिया था। मैंने सोचा बच्चा तो वापिस आयेगा नहीं मुझे तो यही रहना है तो समाज में नग्न कैसे रहूंगी। इसलिए मैंने कफन उतार लिया इसे फिर से साड़ी से जोड़ दूंगी। ऋषिवर का हृदय द्रवित हो गया, आँखों में आँसू बह निकले। पता चलता है कि ऋषि के दिल में देश व समाज के प्रति कितनी वेदना थी। मान्य पाठक, हम ऋषि के किस-किस दर्द की बात करें, वह तो पूर्ण रूप से दर्द निवारक देवता थे। एक छोटा-सा दर्द का वर्णन ओर करते हैं

कोढ़ी को उठाना और उसका दर्द समझना- गुजरात के सोमनाथ मन्दिर में मेला लगा हुआ था, मेले के बाहर एक कोढ़ी पड़ा हुआ था। कोई कहता था मर गया, कोई कहता जिन्दा है, पता चला पुलिस ने मारते-मारते बाहर निकाल दिया है और कोई कहता था पैरों में रस्सी डालकर बाहर नदी किनारे छोड़ दो। मैंने समझ लिया, यह आदमी अभी जिन्दा है। इसके सारे शरीर में खून और पीप निकल रहा है। इसीलिए किसी ने सहायता नहीं दी। मैंने कपड़ा भिगोकर उसके मुंह में पानी डाला, तब उसने आंखे खोल दी थी, तब तक पुलिस भी पहुंच गयी थी, मैंने कहा मेले में चिकित्सा व्यवस्था कहां है और इसको छोड़कर जाना भी ठीक नहीं था। (मैंने सहोसि सहो मयि देहि) मन्त्र बोलकर कोढ़ी को पीठ के ऊपर उठाकर चिकित्सा केन्द्र में भर्ती करवा दिया, विदाई के समय उसने कहा बाबा मुझे मरने का आशीर्वाद दो और उसने देह छोड़ दिया। मैंने नदी में स्नान किया और योग गुरुओं की खोज में निकल पड़ा।

महर्षि के अन्य दर्दो का संकेतः- मैंने छोटे-छोटे उदाहरण दिये। महर्षि दयानन्द का तो सम्पूर्ण जीवन दर्द तो सत्य की स्थापना करना था। उन्होंने ईश्वर के सत्य के दर्शन कराये। उन्होंने पंच महायज्ञ के सत्य का ज्ञान दिया। उन्होंने जो मान्यताएं व कर्म मानव समाज को भयंकर हानि पहुँचाते थे। उस दर्द को समझा। जैसे ईश्वर के नाम पर पशु बलि, जाति पाति का छुआछूत का चलन, सती होने की कुप्रथा, विधवा का अभिशाप, कपोल कल्पित पौराणिक अवैदिक अनार्ष ग्रन्थों से मानव मात्र को हानि, मृतक भोज, काल्पनिक देवी देवताओं की पूजा, राष्ट्र की परतन्त्रता का कारण माना और जिन अनेक कुप्रथाओं द्वारा समाज खोखला होता जा रहा था। इस दर्द को समझा और उसका निवारण भी किया।

युगों बाद धरती पर ऐसे महापुरुषों का आगमन होता है। तभी तो टंकारा की शिवरात्रि बोध रात्री बन गयी, जिसने सारे संसार का अन्धकार ही मिटा दिया। उस देवता ने एक निरन्तर ऋत सत्य का प्रचार करने हेतु आर्य समाज जैसे सर्वोच्च संगठन का गठन किया। धन्य हो ऋषि दयानन्द आपने अपने को बार-बार विष देने वालों को भी क्षमा करते हुए उनके दर्दो को समझ कर ऋत सत्य के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

- गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) मो. 09411512019

वेदों में मानवता की प्रेरणा

❒ प्रेमचन्द्र अग्रवाल

कवि के माध्यम से-

''सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में,
यह क्या गजब है कि आदमी इन्सान नहीं बनता।''

'मैं मानव को ढूंढ रहा हूँ, मैं इस महानगर ऐथन्स में इन्सानियत की तलाश कर रहा हूँ। वह दार्शनिक महाशय दिन में हाथ में जलती हुई लालटेन को लिए चल रहा है, 'मानव की तलाश में और लोग उसे पागल कह रहे हैं। (माध्यम् 'तलाश इन्सान की' डॉ. सत्यपाल सिंह, मुम्बई) यास्काचार्य ने कहा है- **ये मत्वा कर्माणी साव्यन्ति ते मनुष्यः''** अर्थात जो विचारपूर्वक कर्म करे वह मनुष्य (मानव) कहाते हैं।

इसी प्रसंग में वेदमन्त्र प्रस्तुत है ऋ. 10.53.06। **तन्तु तन्वन् रजसो मानुमन्वहि, ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान। अनुल्बणं वयत जोगुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यं जनाम्।।** अर्थात् संसार का ताना बाना, तनता बुनता हुआ भी प्रकाश के पीछे जा, बुद्धि से परिष्कृत किए मार्गो की रक्षा कर। निरन्तर ज्ञान और कर्मो का अनुष्ठान करने वालों के उलझन रहित कर्मो को बिस्तृत कर। इन उपायों से मनुष्य (मानव) बन और देव हितकारी सन्तान उत्पन्न कर कवि लौंग फैलो ने कहा है- **"Lives of grant men, all remind us, We can make our live sub time"**, महान पुरुषों के जीवनों को अनुसरण करते हुए अपने जीवनों को उत्कृष्ट बना सकते हैं। इसी प्रसंग में उर्दू ने प्रस्तुत किया है-

''हुस्ने सूरत से ज्यादा हुस्ने सीरत चाहिए।
आदमी में सबसे पहले आदमीयत चाहिए।।''

ऊपर प्रस्तुत वेदमन्त्र 'तन्तु तन्वन्..... में, **मतुर्भव जनमा दैव्यं जनम्** से प्रेषित है- मनुष्य ही देव बनेगा और देवों से देव सन्तति का प्रादुर्भाव और निर्माण होगा। अतः मानव के बारे में एक शायर कहता है-

''जो जहाजों को पलट देवे उसे तूफान कहते हैं,
जो तुफानो से टक्कर ले उसे इन्सान कहते हैं।''

मानवता के लिए पहला साधन-दान वृत्ति-वेदो में दान वृत्ति पर बहुत अधिक बल दिया गया है ऋग्वेद के दशम मण्डल का 117वां सूक्त मन्त्र 2 द्यनान्न-धन के रूप में प्रसिद्ध है-मन्त्र 10.117.2 **य आघ्राय चकमानाय फित्वोडन्नवान्सन रीफ तायोपजग्मुषो स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मडितारं न विद्वते।।** जो अन्नाधिपति होता हुआ भी अपने द्वारा पर आए हुए भिक्षु के सम्मुख अपने मन को कठोर बना लेता है वह निश्चय रूप से आवश्यकता पड़ने पर उसको सुख देने वाला नहीं मिलेगा। इसी प्रसंग में ऋग्वेद 10.117.06 मन्त्र में मार्ग दर्शन करता है-**मोधमन्नं विन्दते अप्रेचताः सत्यं ब्रवीमि वधइत्स तस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघोभवति केवलादि।।** अर्थात हृदयहीन मनुष्य व्यर्थ ही अन्न का स्वामी बनता है।

माध्यम् मन्त्रों में यजु 8.14.1.2 के प्रस्तुत है कि वेदो में दान और त्याग की भावना इतने व्यापक रूप में छाई हुई है कि उसे वैदिक जीवन का सार कह सकते हैं। वैदिक दान, त्याग और यज्ञ की भावना में ही मानवता निहित है।

मानवता के लिए दूसरा साधन है- दुःखियो का दुःख हरण इस पर अनेक विचार वेदों में मिलते है-अर्थात (1) बुढ़ापे से व्याकुल (गिरे हुए स्वास्थ्य वालों की सेवा करके उन्हें बुढ़ापे से उबारते हैं। (2) वन्दना (प्रभु की वन्दना करने वालों को कष्टों से छुड़ाते हैं) (ऋ 1.117.5) (3) अन्धे और असहायों को चलाते हैं। (प्रस्तुति ऋ 1.112.8 में है)। तीसरा साधन- (परिस्पारिक प्राप्ति)- एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ प्रीति पूर्वक रहें और मित्र भावे रक्खे। इस विषय के कई प्रसंग वेदों में आते है- (अथर्ववेद 3.20.1) यथा। **'सहृदय सांमनस्यमविद्वेष कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाहन्या।।** (अथर्ववेद 3.20. 1)। **येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषतेपिथः। तव कृण्यो ब्रह्म वो गृहे सता न पुरुषेभ्यः।।** हे मनुष्यो सहृदयता एक मनस्कता और अविद्वेष का सन्देश मैं तुम्हें देता हूं। एक दूसरे के साथ ...... इस प्रकार प्रीति रखो जैसे गाय अपने नवजात बछड़े के प्रति प्रीति रखती है।

वेद परस्पर विरूद्ध-हृदय बने हुए व्यक्तियों को एकता के रूप के सूत्र में आवृद्ध करने की प्रेरणा करता है अथर्ववेद 6.9.4। **सं वो मनांसि स ब्रता समाकूतोर्नमामासि। अमी ये विव्रता स्थन तान् वः सं नमयमिसा।।** ''मैं तुम्हारे मनो को, कर्मो के और संकल्पो को परस्पर अनुकूल कर देता हूं। इस प्रसंग में कवि ने कहा है-'आदमी, आदमी जो बन जाए। कष्ट सारे जहां के पिट जाएं।।

चौथा साधन है जहां संसार नीचे गिरे को उपर उठाना' अपना कोई साथी यदि नीचे गिर गया है तो उसे सहारा देकर ऊपर उठाना भी मानव का धर्म है। यदि कोई ऐसा नहीं करता तो मानवता से दूर है। वेदों में इस आशय की विविध प्रेरणाएं प्राप्त होती है-अथर्ववेद 4.13.1। **'इत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः। उतागश्चक्रुष देवा जीव यथा पुनः।। 'हे विद्वानो!** जो नीचे गिर गया है उसे ऊपर उठाओ। जो अपराध करने के कारण उसका दुःफल भोग्य रहा है उसे पुनः जीवन प्रदान करो। अगला साधन है-राक्षसी वृत्रियों से बचाना, यजु 1.7 प्रस्तुत है- **'प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातयो। निष्टप्तं रक्षो निष्टप्टा अरातयः।।** हे मनुष्य तू राक्षसी वृत्तियों को दग्ध कर दे,, स्वार्थ वृत्तियों को भस्म करे। समाज में जो लोग अमानवता के राक्षसोचित कार्य करते है उन्हें सहन न करने का भी उपदेश वेदों में दिया गया है अन्यथा समाज में अमानवता का बोल बाला हो जाएगा। ऋग्वेदमन्त्र प्रस्तुत है-ऋ 10.12.8। **'अकर्मा दस्युरमि नो अमुन्तुरत्यब्रतो अमानुषः। त्वं तस्यडमित्रहन, वधर्दासस्य दम्मय।।** अर्थात्- जो निकम्मे अविचारशील, मानवता का ध्यान न रखने वाले दस्ु लोग हैं उनके अत्याचार को है शत्रुहन्ता, तू मत पनपने दे।

वेद मनुष्य को निम्न धरातल से उठाकर मानव बनाना चाहता है- (ऋ 10.53.6)**मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।** 'तू मनुष्य बन और फिर दिव्य जन को उत्पन्न कर'। आज की बड़ी जरूरत है- कि प्रत्येक परिवार, प्रत्येक समाज और प्रत्येक राष्ट्र इंसान बनाने का संकल्प ले, कवि के शब्दों में 'जो बचाये शान को, स्वाभिमान को, ईमान को। ऐसे एक इंसान की दोस्तो तलाश है।।

- बी-8, पेपर मिल कॉलोनी, यमुनानगर (हरियाणा)

सत्यार्थवचन

वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ी भाग्यवान! जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् हों।

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 2)

યાદ ન જાય દિલસે

રમેશ મહેતા, મો. ૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯

ફેબ્રુઆરી મહીનો ટંકારા માટે ઐતિહાસિક............ રહ્યો... ઋષિ દયાનન્દજીનો બોધોત્સવ ઉજવવામાં આવ્યો ભવ્યાતિભવ્ય રીતે.

ગુજરાતના રાજ્યપાલ મહામહીમ શ્રી ઓ. પી. કોહલીજી આવ્યા... હિમાચલ..., હરિયાણા..., ઉત્તરાંચલ...,પંજાબ..., ઉત્તર પ્રદેશ ..., ઉત્તરી ભારતના લગભગ પ્રત્યેક ભાગમાંથી ઋષિભક્તો ટંકારા આવ્યા. મહારાષ્ટ્ર ..., કર્ણાટક... અને આન્દ્રપ્રદેશમાંથી પણ આવ્યા. ટંકારામાં જ લઘુભારત જોવા મળ્યું.

ઋષિભક્તોએ ઋષિવરના જન્મગૃહ અને બોધમન્દિરને નિહાળી ધન્યતા અનુભવી, એકબીજાના પ્રાન્તમાં આર્યસમાજની સ્થિતિ અને પ્રગતિ પર વિચારણા કરી. ટંકારા ટ્રસ્ટ અને ટ્રસ્ટ સાથે વિવિધ પ્રકલ્પોની સેવામાં જોડાયેલ આર્યસમાજ ભુજ અને રાજકોટના આર્યવીરોની સેવાભાવનાનો અનુભવ કર્યો. મોટાભાગના ઋષિભક્તોને ટ્રસ્ટની વ્યવસ્થા વિષયે કોઈ જ ફરિયાદ નહોતી. આવાસ-ભોજનાદિથી સંતુષ્ટિ હતી.

આ બધામાં કંઈક વિસરાતુ હતું. વિસરાવું સ્વાભાવિક હતું અને છે. ટંકારાની આજની પ્રગતિ, સ્થિરતા માટે જેઓએ પોતાનું સર્વાત્મના સમર્પણ કર્યું છે અને એમના વારસદારો આજે પણ પોતાનો ફાળો આપી રહ્યા છે ... ..., ... શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ આન્તર્રાષ્ટ્રિય ઉપદેશક મહાવિદ્યાલયના આદ્ય આચાર્ય સ્વનામધન્ય સત્યદેવજી વિદ્યાલંકાર અને ટ્રસ્ટને કયારેય આર્થિક સંકડામણનો અનુભવ ન થવા દેનાર શ્રી ઓંકારનાથજી માનકટાલા. સંયોગ જુઓ... ... આ બંને ત્યાગીજનોની સ્વર્ગારોહણ તિથિ પણ ફેબ્રુઆરી મહીનામાં જ આવે છે !!!!!!

આ પંક્તિઓના લેખકને બંને મહાનુભાવો સાથે નિકટમાં રહેવાનું સંસ્થા માટે તેઓના નેતૃત્ત્વમાં સંઘર્ષ કરવાનું સૌભાગ્ય મળ્યું છે.

શ્રી ઓંકારનાથજીનો એક સિદ્ધાન્ત હતો કે જમણા હાથે કોઈને કંઈ આપો તો ડાબા હાથને પણ તેની ખબર ન પડવી જોઈએ. મુંબઈના જુની પેઢીના આર્યજનોને સ્મરણ હશે ... એક લાલચંદ આર્ય હતા. પોલિસના યુનિફોર્મ શૈલીનું ખાખી શર્ટ અને ખાખી ચડ્ડી તેમનો પહેરવેશ હતો. શર્ટના ખભા પર લખાણ રહેતું તંબાકુ છુડવાને વાલા ડૉક્ટર. હાથમાં એક કાળી બ્રીફકેસ જેવી બેગ રહેતી. મુંબઈમાં ફર્યા કરતા. રેલ્વેમાં, સમુદ્ર કીનારે કે ગમે ત્યા. કોઈને તમાકુ ખાતા કે ધુમ્રપાન કરતા જુએ એટલે એને ઉપદેશ આપી તેમનું વ્યસન છોડાવવાના પ્રયત્નો કરતા. તેમના આ મિશનમાં અપમાનો પણ સહન કરવા પડતા.

તેઓને આંખોની સમસ્યા ઊભી થઈ હતી. મુમ્બઈમાં ગીરગામ સ્થિત એક ખાનગી હૉસ્પિટલમાં દાખલ થઈ ગયા હતા. શ્રી ઓંકારનાથજીને આ વાતની ખબર પડી. મને બોલાવીને કહ્યું કે મારી ઑફિસના કેશિયર પાસેથી પૈસા લઈને હોસ્પિટલમાં જઈને લાલચંદજીના ખાતામાં જમા કરાવી આપ. પણ ધ્યાન રાખજે કે લાલચંદજીને મળવા ન જતો. મને આશ્ચર્ય થયું, પુછ્યું તો કહે કે મુમ્બઈના આર્યજનોમાં એ વાત જાણીતી છે કે તું મારી પાસે બેસે છે અને મારા આર્યસમાજને લગતા કામ જુએ છે. લાલચંદજીને ખબર પડી જશે કે આ પૈસા મેં મોકલાવ્યા છે, જ્યારે આ વાતની કોઈને જાણ થાય એવું હું નથી ઇચ્છતો.

આવી જ રીતે મુમ્બઈમાં પવઈ તળાવના કીનારે આર્યશ્રેષ્ઠી અને ટંકારા ટ્રસ્ટના તત્કાલીન ટ્રસ્ટી શ્રી રામનાથ ગ્રોવરજીએ પોતાની જમીનનો એક પ્લોટ દાન કરીને રામાશ્રમની સ્થાપના કરી હતી. ટ્રસ્ટના મોટાભાગના ટ્રસ્ટિઓ ટંકારા સાથે જોડાયેલા હતા. શ્રી ગ્રોવરજી સાથે ગેરસમજ થતા ટંકારા સાથે જોડાયેલા મોટાભાગના ટ્રસ્ટિઓએ રામાશ્રમમાંથી ત્યાગપત્ર આપી દીધા. તે સમયે માત્ર ઓંકારનાથજી જ રામાશ્રમ સાથે જોડાયેલા રહ્યા. હું જ્યારે ટંકારા ટ્રસ્ટનું કામ જોવા માટે મુમ્બઈ ગયો ત્યારે તેમણે મારા રહેવા માટે મુમ્બઈ અંધેરીના મહાકાલી રોડ પર આવેલ પોતાનો ફ્લેટ બતાવ્યો સાથે રામાશ્રમનું નામ પણ કહ્યું. કહે કે રામાશ્રમમાં રહેવું તપશ્ચર્યાનું કામ છે. જંગલ છે (તે સમયે જંગલ હતું) પણ તારા રહેવાથી આર્યસમાજનું કામ પણ તે ક્ષેત્રમાં થઈ શકશે. ૧૯૭૭ થી ૧૯૮૪ સુધી હું રામાશ્રમમાં રહ્યો. આર્થિક સંકડામણ અનુભવતો. ત્યારે પોતાની પાસેથી અને આર્યશ્રેષ્ઠી શ્રી ગુલઝારીલાલ આર્ય દ્વારા મને સહાયતા પહોંચાડ.તા. પરિણામે પવઈમાં રામાશ્રમમાં જ આર્યસમાજ પવઈની સ્થાપના પણ થઈ હતી. મારી પારિવારીક સમસ્યાઓને કારણે મારે મુમ્બઈ છોડવું પડ્યું. સાંભળ્યું છે કે અત્યારે રામાશ્રમમાં આર્યસમાજની કોઈ ગતિવિધિ નથી.

શ્રી ઓંકારનાથજીની ઇચ્છા હતીકે પવઈમાં આર્યસમાજનું એક કેન્દ્ર બને.

કહે છે કે સાર્વજનિક સંસ્થાકીય કાર્ય કરતા હો ત્યારે કોઈની સાથે વિચારોને કારણ મતભેદ ભલે ઊભા થાય મનભેદ ન થવા જોઈએ. શ્રી ઓંકારનાથજીના જીવનમાં આ સિદ્ધાંત ઓતપ્રોત થયેલો હતો. તેમના સમકાલીન શ્રી એમ. કે. એમીન મુમ્બઈની ફોર્ટ આર્યસમાજના પ્રધાન હતા. આર્યસમાજના પ્રચાર ક્ષેત્રે ખૂબ જ સક્રિય હતા. વિશેષ કરીને સમાજની તરછોડાયેલી બહેનો માટે ખૂબ જ રચનાત્મક કાર્યો કર્યા છે. તેઓ અને શ્રી ઓંકારનાથજી વચ્ચે મતભેદ હતા. પણ બને ત્યાં સુધી પ્રત્યક્ષ રીતે એકબીજાની વિરુદ્ધમાં બોલવાનું ટાળતા. શ્રી અમીનજીના દેહાવસાનના સમાચાર મળ્યા. મુમ્બઈના ચર્નીરોડ સ્થિત ચંદનવાડી સ્મશાનગૃહમાં અંત્યેષ્ટિ સંસ્કાર હતા. મને ઓંકારનાથજીએ કહ્યું કે આપણે આ અંત્યેષ્ટિમાં પહોચવું જ જોઈએ. ભલે મારે શ્રી અમીનજી સાથે મતભેદ હતા, પણ તેઓએ મુમ્બઈમાં આર્યસમાજ માટે જે કર્યું છે તેને ધ્યાનમાં રાખવું જોઈએ.

છેલ્લે આક વાત કહેવાની લાલચ રોકી સકતો નથી. તેમની ફેક્ટરીમાં એક કરીગર હતો. ખૂબ જ મહેનતુ અને વફાદાર. પણ એકલો જ હતો. આગળ પાછળ કોઈ હતું નહીં. એટલે પગાર આવે ત્યારે ગમે તેમ વાપરી નાખે. એજ સમયે શ્રી ઓંકારનાથજી માટુંગા આર્યસમાજમાં પણ પદાધિકારી હતા. આર્યસમાજની શાળામાં પાણી પાવા વિગેરેના કામ માટે એક બહેન હતા. વિધવા હતા.

શ્રી ઓંકારનાથજી પોતાના કારીગરને બોલાવીને ઉડાઉપણા માટે ઠપકો આપ્યો, તો કારીગર કહે એકલો છું કોને માટે પૈસા બચાવું. શ્રી ઓંકારનાથજીએ કહ્યું લગ્ન કેમ નથી કરતો તો કહે મારે આગળ પાછળ કંઈ છે નહીં, પછી આર્યસમાજના વિદ્યાલયમાં કામ કરતા વિધવા બહેનને સમજાવ્યા. તેઓ માની ગયા. બંનેના લગ્ન કરાવી આપ્યા. તેઓના રહેવા માટે એક રૂમ લઈ આપ્યો. હવે તો તેઓની ગૃહસ્થી પણ વધી ગઈ છે.

૧૯૮૩ સુધી મેં લગ્ન નહોતા કર્યા. તેમને મારી ચિંતા થવા લાગી. પોતાના ધર્મપત્ની અને આર્યજગતના સુપ્રસિદ્ધ ભજન ગાયિકા માતા શિવરાજવતીને મારા માટે કંઈ કરવાનું કહ્યું. માતા શિવરાજવતી મારા માટે કન્યા જોવા લાગ્યા હતા, પણ પરિવારના દબાણને કારણે પરિવારની પસંદગીની છોકરી સાથે મારા લગ્ન થઈ ગયા. શ્રી ઓંકારનાથજીએ મારા ગૃહસ્થજીવનને આશીર્વાદ આપ્યા.

તેમની ઇચ્છા હતી કે હું વિદેશમાં જઉં. આફ્રિકાના એક દેશમાં પોતાના ધંધાના વિકાસ માટે મને મુકવાની યોજના બનાવી હતી પરંતુ જ્યારે મેં કહ્યું કે હું આર્યસમાજ સિવાય બીજું કામ નહીં કરું તો તેમના જ પ્રયત્નોથી પૂર્વ આફ્રિકાના દારેસલામ નગરની આર્યસમાજની સેવામાં જવાનું સૌભાગ્ય મળ્યું.

મને તો તેમણે પોતાનો માનસપુત્ર માન્યો હતો. તેમના બંને પુત્ર આજે પણ પોતાનો ભાઈ માને છે. મને ગર્વ છે કે આર્યજગતના એક મહાન ત્યાગી શ્રેષ્ઠીના પરિવાર સાથે રહીને જીવનની એક નવી દિશા મળી છે.

સ્મૃતિશેષ આચાર્ય સત્યદેવજીના સંસ્મરણો હવે પછી

ઋષિ દયાનન્દના મિશનના પ્રચાર-પ્રસાર માટે ટંકારાસમાચારના
વધુમાં વધુ ગ્રાહક નોંધવીને સહયોગ આપો

ટંકારાસમાચાર આર્યજગતનું એક માત્ર બહુભાષીય માસિક પત્ર છે જેમાં વિદ્વતાસભર લેખો પ્રકાશિત થાય છે.
વાર્ષિક લવાજમ છે માત્ર એકસો રૂપિયા અને આજીવન માત્ર પાંચસો રૂપિયા
સમ્પર્ક કરો: શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ દ્વારા:
આર્યસમાજ અનારકલી, મન્દિર માર્ગ નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૦૧૧

મહર્ષિ દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપના નામને કાયમી યશ મળે તેવી યોજના

આપ નીચેની કોઈપણ એક અથવા વધારે યોજનામાં, યોજના દીઠ રૂ. ૧૧૦૦૦-૦૦ (અગિયાર હજાર) રૂપિયાનો ફાળો આપી યશના ભાગી બની શકો છો

(૧) ભોજન સેવા તિથિ, (૨) યજ્ઞ સેવા તિથિ, (૩) ગૌ-સેવા તિથિ, (૪) ઔષધ સેવા તિથિ

આ માટે કોઈ એક અથવા વધારે યોજના મુજબ પ્રત્યેક યોજના માટે અગિયાર હજાર રૂપિયા દાનામાં આપો. આપ આપના પરિવારના જે તે સદસ્યની જે તે તિથિ (જન્મ, વિવાહ અથવા પુણ્ય તિથિ) લખાવશો તે તિથિએ આપના તરફથી સેવા થશે. સંસ્થામાં બોર્ડ પર નામ લખવામાં આવશે. તિથિ અગાઉ આપને જાણ કરવામાં આવશે.

આશા છે કે તિથિ દાન આપીને દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપનું નામ કાયમી રીતે યશસ્વી કરવાની આ અમુલ્ય તકનો લાભ ચોક્કસ ઉઠાવશો.

સમ્પર્ક કરોઃ-

શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ, દ્વારા - આર્યસમાજ અનારકલી, મન્દિર માર્ગ,
નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૧૧,
ફોનઃ- ૦૧૧-૨૩૩૬૦૦૫૯, ૨૩૩૬૨૧૧૦

समाचार दर्पण

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर सम्पन्न

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर के तत्वाधान में जन सहयोग से व श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति के नेतृत्व में चार दिवसीय कार्यक्रम के तहत श्री बी.सी. साहू, जयपुर ग्रामीण आंचलिक बैंक वर्तमान रजिस्ट्रार ज्योति राव फूल यूनिवर्सिटी की अध्यक्षता में आज अंतिम दिन सम्मान एवं पुरस्कार वितरण तथा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ। श्रीमती मंजू शर्मा प्रधानाचार्या, आर्य बा.उ.मा.वि. अलवर को निबन्ध प्रतियोगिता में चार समूहों (प्रथम-प्राथमिक स्तर, द्वितीय-उच्च प्राथमिक स्तर, तृतीय-उच्च माध्यमिक स्तर तथा चतुर्थ-महाविद्यालय स्तर) आर्य पब्लिक स्कूल मालवीय नगर में आयोजित देश भक्ति गीत प्रतियोगिता में दो समूहों (जूनियर-मिडिल तक तथा सीनियर-माध्यमिक/उ. माध्यामिक) में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली कुद 19 छात्राओं को श्रीमती अंजू साहू एवं धर्मपत्नी श्री बी.सी. साहू द्वारा श्रीमती इन्द्रा आर्य, श्रीमती सुमन आर्य एवं श्रीमती कमला शर्मा निदेशक आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा सम्मानित एवं पुरूस्कृत किया गया।

पुस्तक विमोचन

आर्य समाज मॉडल टाऊन, दिल्ली में डॉ. अनुशर्मा कौल द्वारा लिखित आर्य समाज की हिन्दी सेवा की दिग्दर्शिका पुस्तक 'पंजाब के हिन्दी साहित्य को आर्य समाज का योगदान' का विमोचन अत्यन्त धूमध ाम से किया गया। विजय सयाल के कुशल संचालन में निर्धारित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा सुमधुर भजन प्रस्तुत किए गए। उपप्रधान श्री राजेन्द्र जी सयाल एवं स्त्री आर्य समाज की प्रधाना डॉ. सुमन शारदा जी ने गणमान्य अतिथियों के साथ पुस्तक का विमोचन कार्य सम्पन्न करते हुए इसे आर्यसमाज के लिए विशेष उपलब्धि बताया। अपनी पुस्तक के विषय में बताते हुए डॉ. अनु शर्मा ने कहा कि उन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से वैदिक साहित्य एवं अहिन्दीभाषी क्षेत्र पंजाब में रचित आर्य समाजी विचारधारा से अनुप्राणित साहित्य को सूत्रबद्ध करने का प्रयास किया है।

आध्यात्मिक सत्संग आयोजित

आर्य समाज रामनगर, गुड़गांव, हरियाणा द्वारा विशाल सप्त दिवशीय आध्यात्मिक दिव्य सत्संग यज्ञ भजन प्रवचन का कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया है। दिल्ली से पधारे राष्ट्रीय कथाकार आचार्य गवेन्द्र जी यज्ञ के ब्रह्म वह वेद प्रवचन किये। उन्होंने कहा कि समय धीरे-धीरे बदल रहा है जो बच्चे कल तक अपने मां-बाप की अंगुली पकड़ कर चलते थे उनकी मर्जी के बिना कोई काम नहीं करते थे वही आपज अपने बूढ़े मां बाप को अकेला छोड़ देते हैं। उन्होंने कहा कि आप किसी से अपेक्षा न करे उपेक्षा न करे आप किसी की प्रतीक्षा न करें आप हर दिन समीक्षा करें।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

'जर्सी वितरण समारोह'

वैदिक विद्या मंदिर, मालवीय नगर, दिल्ली में आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत आर्थिक रूप से कमजोर 225 छात्राओं को सर्दी से बचाव हेतु गर्म जर्सियों का वितरण किया गया। श्रीमती कमला शर्मा ने स्वागत करते हुए अतिथियों, समिति पदाधिकारियों तथा उपस्थितजन को सम्बोधित कर नारी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। कमजोर बच्चों के उज्जवल भविष्य निर्माण करने पर जोर डाला।

133वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज, अजमेर का 133वां वार्षिकोत्सव चार सत्रों में सम्पन्न हुआ। प्रत्येक सत्र में यज्ञ, भजनो एवं विद्वानों के प्रवचन हुए। इस अवसर पर आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने यज्ञ, श्रद्धा, ओ३म् के झण्डे आदि का जीवन में महत्व बताया। सुमधुर भजन बिजनौर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक योगेश दत्त आर्य एवं आर्यजगत् की विश्व प्रसिद्ध साध्वी डॉ. उत्तमायति तथा स्थानीय दयानन्द बाल सदन (अनाथालय) की कु. सुमित्रा आर्य, कु. नैना आर्य, कु. नेहा आर्य, ब्रह्मचारी आकाश आर्य, सुरेन्द्र कुमार आर्य, खुशवन्तसिंह आर्य, भूपेन्द्र सिंह आर्य, मुकेश सिंह आर्य ने प्रस्तुत किये।

धर्मशिक्षक की आवश्यकता

आर्यसमाज अकोला द्वारा संचालित स्कूल में नर्सरी से कक्षा 10 वी तक की शिक्षा की व्यवस्था है। अभी स्कूल में लगभग 900 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस विद्यालयमे विधि कार्यक्रमों के साथ-साथ वैदिक विद्वानो के प्रवचन, शिविर आदि का भी आयोजन किया जाता है। इस समय स्कूल में धर्मशिक्षक न होने से विद्यार्थियों पर वैदिक संस्कारों का प्रभाव अच्छी तरह से नहीं हो पा रहा है। धर्मशिक्षक की योग्यतानुसार वैदिक संस्कारों का प्रभाव अच्छी तरह से नहीं हो पा रहा है। धर्मशिक्षक की योग्यतानुसार उसे उचित मानधन दिया जायेगा एवम् उनके निवास का भी उचित प्रबंध किया जायेगा। धर्मशिक्षक के साथ पुरोहित का कार्य भी आवश्यक है। धर्मशिक्षक तथा पुरोहित के कार्य को सम्पन्न करने योग्य धर्मशिक्षक की आवश्यकता है। सुयोग्य व्यक्ति सम्पर्क करे।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खेडाअफगान जनपद सहारनपुर में अपने एक सौ सतरहवे वर्ष में वार्षिकोत्सव पर धर्म जागृति महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओ३म् की पताका फहराने और यज्ञ से हुआ। दिल्ली से पधारे पूर्व आईएएस अधिकारी आनन्द प्रकाश मित्तल परिवार सहित यज्ञमान बने। इस अवसर पर बिजनौर से पधारे आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी ने कहा कि आर्य सत्य की राह दिखाने वाला होता है। ईश्वर सर्वोपरी और न्यायकारी है। कण-कण में व्याप्त ईश्वर मनुष्यों के हर अच्छे व बुरे कर्मो को देखता है तथा उसके अनुसार फल मनुष्यों को भुगतना पड़ता है। ईश्वर कभी किसी से न कभी खुश होता है और न ही नाराज होता है। वेदों में ईश्वर को एकरस बताया गया।

वार्षिक दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पटेल नगर, नई दिल्ली में प्रधानाचार्या रश्मि गुप्ता जी की अध्यक्षता में वार्षिक दिवस 'नमामि गंगे' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी की डायरेक्टर श्रीमती निशा पेशिन जी, उत्तरी दिल्ली के मेयर श्री योगेन्द्र चन्दोलिया जी, पाठशाला के चेयरमैन श्री रविन्द्र कुमार जी तथा मैनेजर श्री जी.आर. साहनी जी थे। डी.ए.वी. संस्थाओं के अनेक प्रिंसीपल भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। वार्षिक दिवस में नन्हे मुन्ने बच्चों का रंगारंग कार्यक्रम नृत्य, संगीमयी लघुनाटिका, योगाभ्यास तथा जूड़ो-कराटे कला का प्रदर्शन किया गया। वार्षिक पुरस्कार वितरण किया गया तथा मुख्य अतिथिगण से पाठशाला की मैगजीन विविधा का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नमामि गंगे नृत्य नाटिका थी जिसमें मां गंगा के अवतरण से लेकर गंगा की अस्वच्छता को दर्शाया गया था तथा अंतिम दृश्य में नृत्य नाटिका द्वारा गंगा स्वच्छता अभियान तथा पर्यावरण सुरक्षा हेतु बच्चो ने प्रण किया।

जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

<u>डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल झिंगुरदह</u> के प्रांगण में 19वीं सदी के महान समाज सुधारक, अछूतोद्वारक, वैदिक ज्ञान के स्रोत, तेजस्वी, कर्मयोगी आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन पूरे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। दयानन्द के जीवन पर आधारित झांकी प्रस्तुत की गयी। ऋषि लंगर का विशेष प्रबन्ध विद्यालय प्रबंधन द्वारा किया गया जिसका आनन्द समस्त अतिथियों, छात्र-छात्राओं एवं विद्यालय के समस्त कर्मचारियों ने लिया।

अर्जुनदेव चढ्डा सम्मानित

स्वच्छ भारत, स्वस्थ्य भारत अभियान के अर्न्तगत नए कोटा में स्थित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल द्वारा अन्य विद्यालयों की सामुहिक रैली निकाली गई। स्वच्छता अभियान, साईकिल रैली को विधायक प्रहलाद गुंजल ने झण्डी दिखाकर रवाना किया। कई वार्डो में घूमती हुई रैली वापस विद्यालय प्रांगण में पहुंची। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी व आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा को विधायक प्रहलाद गुंजल, विधायक संदीप शर्मा, महापौर महेश विजय व पूर्व महापौर श्रीमती सुमन श्रृंगी ने स्मृति चिन्ह व प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया।

आर्य दल सम्मानित

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में आयोजित ऋषि बोधोत्सव में शामिल हुए प्रतिनिधियों का <u>आर्य समाज जिला सभा कोटा</u> द्वारा आर्य समाज विज्ञान नगर में माल्यार्पण कर स्वागत व सम्मान किया गया।

20 व्यक्तियों के दल ने आर्य समाज अहमदाबाद में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन कार्यक्रम टंकारा में ऋषि बोधोत्सव के कार्यक्रम के साथ ऐतिहासिक नगरी द्वारा राजकोट, पोरबंदर एवं सोमनाथ मंदिर व साबरमती आश्रम का भी भ्रमण किया।

सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़े

<u>आर्य समाज कोटा</u> ने सामुहिक विवाह सम्मेलन में नवदम्पत्तियों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये। सर्वजातीय सामुहिक विवाह सम्मेलन में 27 नवदपत्तियों को महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश विधायक प्रहलाद गुंजल के कर कमलों से भेंट किये गए।

शोक समाचार

<u>आर्य समाज पंचवटी, नासिक</u> के वरिष्ठ महानुभाव श्रीमती अनीता देवी जिन्होंने हैदराबाद संगाम में भाग लिया और आर्य समाज के संस्थापक सदस्यों में से थी, 94 वर्ष की आयु में श्रीमती कैलाश रानी कपूर जो कि आर्य समाज की कार्यकारी सदस्या थी और पूरे महाराष्ट्र में आर्य समाज के प्रचार प्रसार का कार्य किया का 84 वर्ष की आयु में और श्रीमती शशि कपूर जो कि आर्य समाज की संस्थापक के सदस्यों में से थी का दिनांक 19.11.2014 को हृदय गति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया है।

<u>आर्य समाज झण्डीचौक पूर्वी, पौढ़ी गढ़वाल</u> के संस्थापक वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं सामाजिक सरोकारों के प्रति समर्पित व्यक्तित्व श्री सरादू राम आर्य का हृदय गति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया है।

<u>आर्य समाज कछवाहा राजपूत चौपाल, ऊंचा गांव, मथुरा</u> के महाश्य किशन लाल आर्य विद्याचस्पति का हृदय गति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया है।

हम टंकारा ट्रस्ट की ओर से संवेदना करते हुए दिवंगत आत्मा के प्रति शान्ति एवं सद्गति की प्रार्थना करते हैं।

भावभीनी श्रद्धांजलि

<u>आर्य समाज मन्दिर, जवाहर नगर, पलवल</u> में शहीद ऊधम सिंह का बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का आरम्भ यज्ञ से किया गया। मुख्य यजमान कार्यकारी प्रधान सतीश आर्य थे। यज्ञ ब्रह्मा व मुख्य वक्ता श्री देशराज शुक्ल ने शहीद ऊधम सिंह की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जलियाँ वाला बाग के मुख्य अत्याचारी अंग्रेज आरोपी जनरल डायर को इंगलैण्ड में स्थित इंडिया हाऊस में जाकर अपनी पिस्तौल से मौत के घाट उतार कर अमृतसर के जलियांवाला बाग का बदला ले लिया।

गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली में प्रवेश प्रारम्भ

श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 6,7 व 8वीं प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण छात्र का 9वीं, 10वीं, 11वीं व 12वीं में भी प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। निर्धन छात्रों का सम्पूर्ण खर्च गुरुकुल वहन करता है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

- आचार्य सुधांशु, मो. 8800443826

वेद प्रचार का विशाल आयोजन

<u>आर्य केन्द्रीय सभा जबलपुर</u> के द्वारा वेद प्रचार का विशाल आयोजन आदर्श नगर के मैदान में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 51 कुण्डीय सर्वकल्याण महायज्ञ, सुमधुर भजन तथा माननीय गहन चिंतनपरक वैदिक सिद्धांतमय प्रवचन प्रातः सायं दोनों समय आर्य आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान विचारक, प्रवक्ता, स्वनामधन्य आचार्य डॉ. वागीश जी शर्मा (यज्ञतीर्थ एटा) के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में आर्य समाज के धर्माचार्य पं. धीरेन्द्र पाण्डेय जी का अमूल्य योगदान रहा।

प्रवक्ता सम्मानित

जयपुर एवं उपनगर आर्यसामाजिक संस्थाओं की गतिविधियों एवं समारोहों के समाचार, प्रसारणार्थ प्रेषित करने वाले हिन्दी साहित्यकार, पत्रकार तथा मानसरोवर आर्यसमाज के उपप्रधान री ईश्वर दयाल माथुर का भारतीय जनता पार्टी द्वारा समारोह पूर्वक सम्मान किया गया है। 78 वर्षीय श्री माथुर को राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय व अधिकारिता मन्त्री श्री अरूण चतुर्वेदी ने शाल, प्रतीक चिन्ह एवं माल्यार्पण के साथ के सम्मानित किया।

आर्य समाज ने पिलाया औषधीय काढ़ा

स्वाईन फ्लू के बढ़ते प्रकोप से बचाव हेतु आर्य समाज की ओर से विज्ञाननगर में औषधीय काढ़ा पिलाया गया। **आर्य समाज के जिला कोटा** प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि स्वाईन फ्लू से बचाव के लिए रोग प्रतिरोधक काढ़ा कई औषधीय जड़ी बूटियां व अन्य सामान मिलाकर **विज्ञाननगर आर्य समाज** परिसर में काढ़ा तैयार किया गया। जिसे आर्यसमाज विज्ञाननगर मुख्य द्वार के पास काढ़ा वितरित किया। विज्ञाननगर के पांचो सेक्टर, विस्तार योजना, संजय नगर चौराहा, पीएनटी कॉलोनी के आसपास का एरिया, इन्द्रा नगर कच्ची बस्ती, विज्ञाननगर के दुकानदार व स्त्री पुरुष, बच्चों ने यहां ताजा बना हुआ काढ़ा पिया। यह काढ़ा गिलोय (अमृता) तुलसी, नीम, हल्दी, मिश्री, गुड़, काली मिर्च से तैयार किया गया। यह काढ़ा फ्लू, डेंगू, चिकनगुनिया व सभी प्रकार के बुखार में उपयोगी है।

संस्कारित पुत्री का प्रतिभा-प्रदर्शन

जयपुरः आर्य परिवार की संस्कारित पुत्री, मानसरोवर की सुपुत्री भारती शर्मा ने राजस्थान न्यायिक सेवा परीक्षा (2013) में 54वां स्थान प्राप्त कर प्रतिभा प्रदर्शन किया है। सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी की प्रेम कुमार शर्मा तथा आर्य सत्संगी श्रीमती लताशर्मा की पुत्री सुश्री भारती वर्तमान में राजस्थान सरकार में कनिष्ठ विधि अधिकारी पद पर आसीन है।

चुनाव समाचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा आगरा

प्रधान- श्री अर्जुनदेव महाजन **मन्त्री-** श्री आर्य सत्यदेव गुप्ता

कोषाध्यक्ष- श्री विजय अग्रवाल

गिरधारी लाल आर्य महर्षि दयानन्द संस्थान, आर्य समाज लेन, मदमपुर सुखरों, कोटद्वार

प्रधान- श्री सुरेन्द्र लाल शर्मा **मन्त्री-** श्री वीरेन्द्र देवरानी

कोषाध्यक्ष- श्री बचन सिंह गोसाई

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

गौ-दान : महा-दान

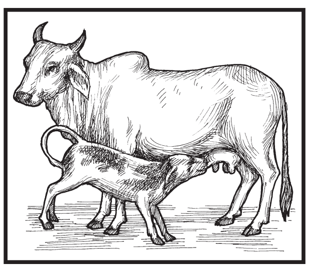

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

अगर आप न चाहें तो.......

❒ ओमप्रकाश बजाज

किसी विचारक ने बिलकुल सही कहा है कि यदि आप स्वयं न चाहें तो किसी की मजाल नहीं कि वह आप को दुःखी कर सके। यह बात सबसे अधिक पक्की उम्र के बुजुर्गों पर सटीक बैठती है, सही है कि आयु के बढ़ने के साथ कुछ असुविधाएं कुछ कठिनाइयां, बीमारी हमारी, उपेक्षा, अव्हेलना होने लगती हैं, पर यह तो सब के साथ है, ऐसा सदा से होता आया है। हम ने भी अपने-अपने परिवार में, अपने परिचितों में यह होते देखा है, फिर हम क्यों उसी स्थिति से असहज होने लगते हैं। क्यों नहीं इसे दुनिया की रीत मान कर सामान्य रूप से लेते, यह भी एक तथ्य है कि हमारी जान पहचान वालों में ही, गिने चुने ही सही, ऐसे भी होते हैं जो इस सब को साधारण भाव से लेते हुए अपने जीवन के बचे हुए दिन बिना किसी आक्रोश के बिताते हैं, स्वयं भी संतुष्ट रहते हैं, परिवार को भी परेशान नहीं करते तथा अपने आसपास वालों में भी लोकप्रिय बने रहते हैं।

बुजुर्गों के अनमने रहने का एक बड़ा कारण यह भी है कि पत्र पत्रिकाएं, टी.वी. चैनल आदि अकसर बड़ी आयु वालों के प्रति सहद्‌यता दिखाते हुए उनकी दुर्दशा दयनीयता विपन्नता दर्शाने वाली घटनाओं को बढ़ा चढ़ा कर प्रकाशित प्रसारित करना अपना नैतिक दायित्व मान बैठते हैं तथा इसे लेकर आज की पीढ़ी को, समाज को तथा सरकार को कोसने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते! ऐसे प्रचार प्रसार से कितना लाभ वरिष्ठ नागरिकों को होता है यह तो भगवान जाने किन्तु इसमें कोई शक नहीं कि यह धारणा सुदृढ़ हो जाती है कि परिवार के बहू बेटों की उपेक्षा एवं प्रतारणा के फलस्वरूप बुजुर्गों का जीवन कष्टमय तथा स्थिति दयनीय हो गई है। इस सब का विपरीत प्रभाव बुजुर्गों की सामान्य मनोवृत्ति तथा मानसिकता पर भी पड़ना स्वाभाविक है, वे भी स्वयं को सब की दया एवं सहानुभूति का पात्र मानने लगते हैं,

वर्तमान समाज कई समस्याओं से ग्रसित है, बुजुर्गों की समस्या उनमें से एक मात्र हैं, समाज इन समस्याओं को उनके वरीयताक्रम में ही लेता है। सरकार का अपना एक ढर्रा होता है तथा हर समस्या के समाधान का उसका अपना एक तरीका होता है। तदनुसार सरकार ने कानून बना दिया कि बुजुर्ग अपनी औलाद से अपने गुजारे खर्चे के लिए अदालत का दरवाजा खटखटा सकते हैं, अब भोलीबादशाह सरकार को कौन समझाये कि भारतीय समाज में कौन सा मां या बाप अने बेटे बेटी के खिलाफ कोर्ट में जाएगा? फिर पक्की उम्र के यह बुजुर्ग कैसे वहां के चक्कर काटेंगे? कैसे वहां के माहौल से निपटेंगे? सरकार की ही भान्ति समाज भी सामान्यता अपने कर्त्तव्य की खानापूर्ति मात्र करके संतुष्ट हो जाता है।

पुरानी कहावत है कि वह क्या जाने पीर परायी जा के पैर न फटी बिवायी, दरअसल बुजुर्गों की परेशानियां उस उम्र में पहुंचे बिना समझी ही नहीं जा सकती। इसीलिए समाज अथवा सरकार में बैठे कम आयु वाले उसे भलीभान्ति महसूस ही नहीं कर पाते। इसमें उनका भी कोई दोष नहीं है। डाक्टर तक जिनसे ऐसे बुजुर्गों का वर्षो से सरोकर होता है कई बार उनकी रोज रोज की शारीरिक शिकायतों को सुन-सुन कर झुंझला जाते हैं, हम बुजुर्ग न जाने यह क्यों भूल जाते हैं कि बढ़ती आयु के साथ शरीर के अंगो का शिथिल होना, कमजोर हो जाना, टूट-फूट, काम न करना, दर्द करना, सूज जाना स्वाभाविक है। हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ यह तकलीफें तो रहेंगी ही, बढ़ेंगी ही, हमें अपने आप में इन्हें सहने बर्दाश्त करने की आदत डाल लेनी जरूरी है। तकलीफ अधिक होने पर दर्द निवारक दवाई जैसी डाक्टर ने बताई हो, ले लेनी चाहिए। वह भी लगातार नहीं। वरना आदत पड़ जायेगी तथा दवाई भी असर नहीं करेगी। थोड़ा बहुत व्यायाम, टहलना, हाथ पैर हिलाना भी आवश्यक है, वरना अंग शिथिल हो जाने से जकड़न होने से और भी परेशानी होगी।

बढ़ती आयु में अपने आप को व्यस्त रखना बहुत ही जरूरी है, पढ़ने लिखने का, घूमने का, मित्रों परिचितों के साथ गप लड़ाने का, टी. वी. देखने का, समाज सेवा का, जो भी शौक हो, हॉबी हो, शगल हो, उसे बनाए रखना चाहिए। व्यस्त रहने से दिमाग नकारात्मक विचारों में उलझने से बचा रहता है। यह तो कभी भी न सोचें कि आप फालतू हैं, बेकार है, परिवार पर या समाज पर बोझ है, ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। आप ने अपने समय में अपने परिवार के प्रति, कामकाज से जुड़े, समाज से सम्बन्धित आदि सभी कर्त्तव्य, सारे दायित्व भलीभान्ति पूरी निष्ठा से, उत्साहपूर्वक निभाये हैं। आप अपनी पारी पूरी ईमानदारी से खेले हैं, अब भी आप अपनी उपस्थिति से, अनुभव जनित सलाह से, यथाशक्ति योगदान से हर प्रकार से उपयोगी हैं, कभी भी आत्म-अव्मूल्यनकर करें, वरना अवसाद का शिकार हो कर स्वयं अपने लिए एवं अपने परिवार के लिए बड़ी कठिनाई पैदा कर लेंगे।

- विजय विला, 166-कालिंदी कुंज, पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर-452018, मो. 9826496975

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	शिवराजवती आर्या	रामनाथ सहगल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

(पृष्ठ 1 का शेष) वेद की शिक्षा के प्रति विश्वास भी तभी प्राप्त कर सकेंगे। विश्वास के पश्चात ही उसमें श्रद्धा-आस्था हो पाती है तभी वह उत्साहित होकर निष्ठा से कार्य करता है। प्रत्येक व्यक्ति परिणाम चाहता है पुरुषार्थ करना नहीं चाहता इसीलिए आज हमारे परिवार टूटते जा रहे हैं पुरानी पीढ़ी के लोग सामूहिक परिवारों में रहकर उन्नति करते थे। सभी प्रसन्न एवं निश्चिन्त रहते हुए

अपने पुत्रों का चरित्र निर्माण करके अपने पितृ ऋण से मुक्त होने का प्रयास चलता रहता था। आज हमारी यह पुरातन परम्परा का लोप हो रहा है जिसका दुष्परिणाम आपके समक्ष है। अत: वैदिक परम्परा किसी न किसी रूप में ग्रामों सुरक्षित थी आज पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव नगरों से ग्रामों की ओर भी प्रभावी हो गया है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ''वेदों की ओर लोटो'' का नारा देकर यही बताने का प्रयास किया था कि वेद सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से जो ज्ञान दिया है वह मानव मात्र के कल्याण के लिए है उसमें हम किसी भी वर्गवाद में आकर यदि इस मार्ग से द्वेष करते हैं तो स्वयं अपनी ही हानि है। मानवता का हनन है आसुरी वृत्तियों का जन्म हो जायेगा और आपके परिवार में राक्षस जन्म लेकर पूरे घर को लंका जैसा वातावरण बना देंगे। हमें अयोध्या जैसा वातावरण बनाना है जहां राम-लक्ष्मण का स्नेह और राम, भात जैसा त्याग समर्पण दिखाई देगा माता कौशल्या के संस्कार परिवार में रामराज्य लाने में सहयोगी बनेगें। हमारी भी इच्छा ऐसे अच्छे परिवार को प्राप्त करने की रहती है उसके लिए केन्द्रबिन्दु वैदिक परम्परा से ही जुड़ना होगा इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। ''नान्य: पन्था: विद्यतेऽमनाय'' अत: स्वयं को सुखी बनाने के लिए वेदानुकूल जीवन जीने का संकल्प लें। उदाहरण के रूप में आपको विदित करना चाहता हूँ कि 1860 से लेकर 2000 तक एक समय ऐसा आया कि आर्य समाज शताब्दी एवं आर्य महासम्मेलन देशभर में बड़े रूप में आयोजित होने लगे। इस अवसर पर यदि शोभायात्रा निकलती थी तो उसके संयोजक श्री रामनाथ जी सहगल आर्य युवा नेता हुआ करते थे। शोभायात्रा की व्यवस्था पूर्व अनुशासन में रहती थी और अन्त में उसकी सफलता का श्रेय मान्य सहगल जी को ही जाता था। इनके व्रत का अनुपालन करने के लिए अपने सुपुत्र श्री अजय सहगल जी को तैयार किया। संस्कार दिये वातावरण बना कर उन्हें मानसिक रूप से तैयार किया वे भी आधुनिक आर्य पुत्रों की तरह अपनी नई दुनियां में रहते हुए परिवार का पोषण में संलग्न हो सकते थे लेकिन अपने पिता जी के प्रत्येक कार्य में उनका सहयोग किया और टंकारा ट्रस्ट को भी अपने सम्भाला सम्मेलनों में पिताजी की तरह ही तन-मन-धन से अपने युवा साथियों की पूरी टीम बनाकर सफल आयोजन करते हैं यह वेद के वाक्य को जीवन में चरितार्थ कर रहे हैं अब आप अनुमान लगा सकते हें कि सहगल जी ने तैयारी में कितना समय परिवार को भी दिया होगा और आप अत्यन्त प्रसन्न होगें इनके पौत्र भी अनुवर्ती होकर महर्षि दयानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संकल्पित हैं। आज इनसे प्रेरणा लेकर ''अनुव्रत पितुः पुत्रो'' पुत्र पिता के अनुव्रती हो कि सार्थक करने के लिए आज से ही पुरुषार्थ प्रारम्भ करना है वर्ष में कई बार टंकारा जाकर वहां की व्यवस्था को देखना धन की पूर्ति करना एवं सम्मेलनो-.... का जैसे कार्यो को समय पर सुव्यवस्थिति पूरा करना यह पिता श्री की संयोजन शैली से ही अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह का युद्ध सीखा है आप सभी का स्नेह मिलेगा तो यह आर्य होनहार, युवक आर्य समाज के देदीप्यमान नक्षत्र की तरह अपनी विशेष पहचान बनायें। प्रभो इन्हें सद्बुद्धि सामर्थ्य प्रदान करें।

- गुरुकुलपूठ, पोस्ट बहादुरगढ़, मढ़ मुकेश्वर, जिला-हापुड़, उ.प्र. मो. 09837402192

(पृष्ठ 2 का शेष)

शर्मा जी ने लगभग एक घंटे तक इस विषय पर अपने विचार रखें। मानव को सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना बताते हुए उसे अन्य जीवों से भिन्न बताया और कहा कि परमात्मा ने मानव को अच्छा कर्म करने के लिए हाथ और मधुर बोलने के लिए वाणी प्रदान की है जो उसे अन्य जीवों से विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। विद्वान वक्ता ने कहा कि ईश्वर प्रदत्त आठ सौभाग्य-शरीर, बुद्धि, मन की भावना, शिक्षा, माता-पिता, कर्मक्षेत्र, जीवन-साथी एवं संगठन इन सभी का घनिष्ठ संबंध परम आनन्द का स्रोत है और मनुष्य श्रेष्ठ तब बनता है जब वह अपनी क्षमताओं का प्रयोग समर्पण और त्याग के लिए करता है, अपने लिये नहीं। श्री शर्मा ने स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज जैसे महापुरुषों का उदाहरण देकर अपनी बात को पुष्ट किया जिन्होंने अपना जीवन परहित को समर्पित कर दिया और उसमें आनन्द की प्राप्ति की।

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स की अध्यापिकाओं, छात्राओं और राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयं सेविकाओं ने मिलकर 'वृक्षारोपण महोत्सव' का भी आयोजन किया जिसमें प्रस्तावित डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी की भूमि पर साल, आमला, पापुलर एवं फलों के पौधों का रोपण किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा कॉलेज में तथा गुरु तेगबहादुर साहेब गुरुद्वारा, बराड़ा में 'रक्तदान शिविर' का आयोजन करके 192 यूनिट रक्त एकत्रित किया। इस स्मरणीय आयोजन को सफल बनाने में श्री के.एल. खुराना, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी, प्रधान, आर्य युवा समाज (हरियाणा) एवं श्री सत्यपाल आर्य, सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, दिल्ली एवं मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हरियाणा तथा डॉ. सुषमा आर्या, प्राचार्या, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुना नगर का उल्लेखनीय योगदान रहा। हरियाणा राज्य की आर्य समाजों, डी.ए.वी. विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्राचार्यो, अध्यापकों और कर्मचारियों ने इस आयोजन को सफल बनाने में तन, मन और धन से सक्रिय सहयोग किया।

प्यारे ऋषि के वचन प्यारे

वह जन्म-पत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोक-पत्र' रखना चाहिये क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है तब सबको आनन्द तब तक होता है कि जब तक जन्म-पत्र बन के ग्रहों का फल न सुनें।

क्या तुम मृत्यु, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से भी बचा सकोगे।

जो माता-पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों वा शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपने सन्तानों और शिष्यों को विष पिला कर नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 2)

यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तान को तन, मन से विद्या धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 2)

ईश्वर का स्वरूप

एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी

ईश्वर कहां है? कैसा है? और क्या करता है?

सामाजिक जागरूकता के लिए प्रख्यात
शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों का तर्कपूर्ण उद्‌बोधन

35 विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं तथा रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशनों (दक्षिण दिल्ली) का एक संयुक्त प्रयास

दिनांक 5 अप्रैल, 2015 (रविवार) को सांय 3.30 बजे से 8.00 बजे

स्थान : आर्य ऑडिटोरियम, चंद्रवती स्मारक ट्रस्ट, देसराज परिसर, (इस्कान मन्दिर के पास) सी–ब्लाक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

– ईश्वर कहां रहता है, कैसा है और वह क्या करता है,? ईश्वर का स्वरूप कैसा है?

– क्या हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि के ईश्वर अलग–अलग है? क्या ईश्वर सब कुछ कर सकता है? क्या ईश्वर को जाने बिना उसे माना जा सकता है?

– क्या ईश्वर पापों को क्षमा कर सकता है? क्या ईश्वर अपने भक्तों की पुकार सुनकर दौड़ा चला आता है? क्या ईश्वर आता जाता है या सभी जगह सर्वदा रहता है?

– क्या ईश्वर किसी विशेष भाषा को ही समझता है? क्या ईश्वर किसी विशेष स्थान पर ही रहता है? क्या सभी प्रकार की घटनाएँ ईश्वर की इच्छा से होती है?

– इत्यादि गहन प्रश्नों पर सत्य जानने की प्रबल इच्छा रखने वाले प्रबुद्ध लोगों के लिए एक विचार चर्चा आयोजित की गई है, जिसमें विभिन्न विचारधाराओं के दार्शनिक अपने–अपने तर्क रखेगें।

– आप इस संगोष्ठी में सादर आमंत्रित है। कृपया समय निकालकर पधारें और अपने विश्वास को बौद्धिक, तार्किक आधार दें।

संगोष्ठी अध्यक्ष

प्रो. जे. एल. गुप्ता
– पूर्व कुलपति जी.जी. विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.), पूर्व प्राचार्य, श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

पैनल के सदस्य

हिन्दू दर्शन

स्वामी राघवानन्द जी
– प्रधान, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं प्रमुख उदासीन आश्रम, पहाड़ गंज, दिल्ली

इस्लाम दर्शन

प्रोफेसर एम एच कुरैशी
– पूर्व प्रवक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, चेयर प्रोफेसर, ए.एम. ख्वाजा, चेयर जामिया मिल्लिया इस्लामिया

ईसाई दर्शन

डॉ. पी. जैकब चेरियन
– विभागाध्यक्ष भौतिक विज्ञान विभाग, सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह
– एसोसिएट प्रोफेसर, सेंट जॉन कालेज, आगरा

वैदिक दर्शन

डॉ वागीश आचार्य
– प्राचार्य, आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय एटा, उत्तर प्रदेश

डॉ विनय विद्यालंकार
– एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) राजकीय पी.जी. कॉलेज रामनगर, नैनीताल एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड

आशीर्वचन : **श्री बृज मोहन लाल मुंजाल**–चैयरमेन, हीरो ग्रुप, **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**–प्राचार्य, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि : **डॉ अशोक के. चौहान**–संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान व चेयरमैन, ए.के.सी. ग्रुप
: **डॉ अमिता चौहान**–चेयरपर्सन, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल्स

विशिष्ट अतिथि : **श्री रामनाथ सहगल, श्री योगेश मुंजाल, श्री धर्मपाल आर्य, डॉ. शशि प्रभा कुमार, श्री रजनीश गोयनका, श्री आनंद चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, श्री अचल कटारिया, श्रीमति बाला चौधरी, श्री विनय आर्य, श्री राजीव आर्य**

❖ कृपया अपना अग्रिम पंजीकरण करने के लिए श्री अजय कुमार (9811111989), श्री राजीव चौधरी (9810014097), कर्नल गोपाल वर्मा (9811121242) से संपर्क करें जिससे उचित व्यवस्था की जा सके। ❖ कृप्या 3.15 तक अपना स्थान ग्रहण करें। ❖ आडिटोरियम परिसर में पार्किंग की समुचित व्यवस्था है।

❖ इस कार्यक्रम के लिये कृपया "आर्य समाज जी.के.–1" को उदारता पूर्वक सहयोग दें। आर्य समाज जी.के.–1 को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80–जी (5) के अंतर्गत आयकर छूट के योग्य है।

संयुक्त आयोजक : (1) ग्रेटर कैलाश रेजिडेंट एसोसिएशन (जीकेआरए) (2) रेजिडेंट वेलफेयर सोसाईटी, एस ब्लाक जी.के.1 (3) भारत विकास परिषद, दक्षिण दिल्ली (4) वैश्य सभा दक्षिण दिल्ली (5) कैलाश रेजिडेंट एसोसिएशन (6) कैलाश ट्रेडर्स एसोसिएशन (7) ग्रेटर कैलाश क्षेत्र विकास समिति (8) कैलाश वीमेन रेजिडेंट एसोसिएशन (9) अग्रवाल सभा जी.के. 2 (10) सीनियर सिटिजन एसोसिएशन जी.के. 1 (11) रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन ईस्ट ऑफ कैलाश (12) न्याय भूमि (एनजीओ) (13) कॉन्फेडरेशन ऑफ सीनियर सिटिजनस एसोसिएशन ऑफ दिल्ली (14) दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल (15) आर्य समाज ग्रेटर कैलाश 1 (16) आर्य समाज ग्रेटर कैलाश 2 (17) आर्य समाज डिफेन्स कालोनी (18) आर्य समाज लाजपत नगर (19) आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लेव (20) आर्य समाज कस्तूरबा नगर (21) आर्य समाज कालकाजी (22) आर्य समाज ग्रीन पार्क (23) आर्य समाज मदनगीर (24) आर्य समाज मस्जिद मोठ (25) आर्य समाज अमर कालोनी (26) आर्य समाज ईस्ट ऑफ कैलाश (27) आर्य समाज संतनगर (28) आर्य समाज गोविंद पुरी (29) राधा कृष्णा मन्दिर जी.के. 1 (30) श्री सनातन धर्म मन्दिर सभा जीके 2 (31) महावीर जी मन्दिर (पहाड़ीवाला) जीके 1 (32) शिव मन्दिर एस ब्लाक जी.के.1 (33) श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर कालकाजी (34) सनातन धर्म सभा – श्री राधा कृष्ण मन्दिर व राम मन्दिर ईस्ट ऑफ कैलाश (35) गुरूद्वारा गुरुसिंह सभा जी.के. 1 (पहाड़ीवाला)

मीडिया प्रायोजक

विराट वैभव

स्वाभिमान

स्वावलम्बन

॥ ओ३म् ॥

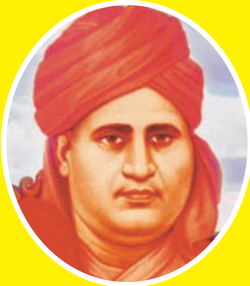

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 18 जून से 28 जून, 2015

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारो का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम् भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है।

सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों व गुरुकुलों में जहां वीरांगना दल की शाखायें लगती हैं से प्रार्थना है कि वे अपनी चुनी हुई वीरांगनाओं को इस शिविर में भेजें।

उद्घाटन : वृहस्पतिवार 18 जून, 2015 सायं 5 बजे

समापन : रविवार 28 जून, 2015 प्रातः 10 से 1 बजे

★शिविरार्थी 18 जून को दोपहर 1 बजे तक जरूर पहुँच जायें। ★ आयु कम से कम 14 वर्ष हो ★ टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लायें। ★ शिविर का गणवेश 2 जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज, सफेद मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएं। ★ शिविरार्थी कोई भी कीमती वस्तु, मोबाइल व अधिक पैसा साथ न लाएं। ★ शिविर शुल्क 500 रूपये प्रति शिविरार्थी होगा। पाठ्य पुस्तकें शिविर की तरफ से दी जायेंगी। ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 18 जून 2015 दोपहर 1 बजे तक करा लें।

निवेदनः सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस राष्ट्रीय शिविर में सैकड़ों कन्याएं भाग लेंगी, अतः अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य अनुसार नकद राशि, आटा, दाल, चावल, देसी घी, मसाले आदि देकर पुण्य का लाभ उठाएं।

इस शिविर में योग्य प्रशिक्षिकाओं के निर्देशन में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

-: संयोजक :-

साध्वी डॉ.उत्तमायति प्रधान संचालिका मो. 08750482498 (दिल्ली) 09672286863 (अजमेर)	**मृदुला चौहान** संचालिका मो. 09810702760	**आरती खुराना** सचिव मो. 09910234595	**विमला मल्लिक** कोषाध्यक्ष मो. 09810274318

-: निवेदक :-

सत्यानन्द आर्य प्रधान	**श्री राजीव आर्य** शिविर संरक्षक	**अंजली कोहली** प्रधानाचार्या मो. 09818110244	**अरविन्द नागपाल** मैनेजर

एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली

प्रशिक्षकः **श्रीमती अभिलाषा, श्री सचिन**

संस्कृति

सेवा

Everybody says,
"Mistake is the first step of success"
but the real fact is,...
"Correction of mistake
is the first step of success"

टंकारा समाचार अप्रैल, 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-04-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.03.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय